(1) 1997-1998 - Dindori M.P.

आज का बैगाचक

बैगा आदिवासियों के समुचित विकास की पहल

नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ वीमेन चाइल्ड एंड यूथ डेव्हलपमेंट

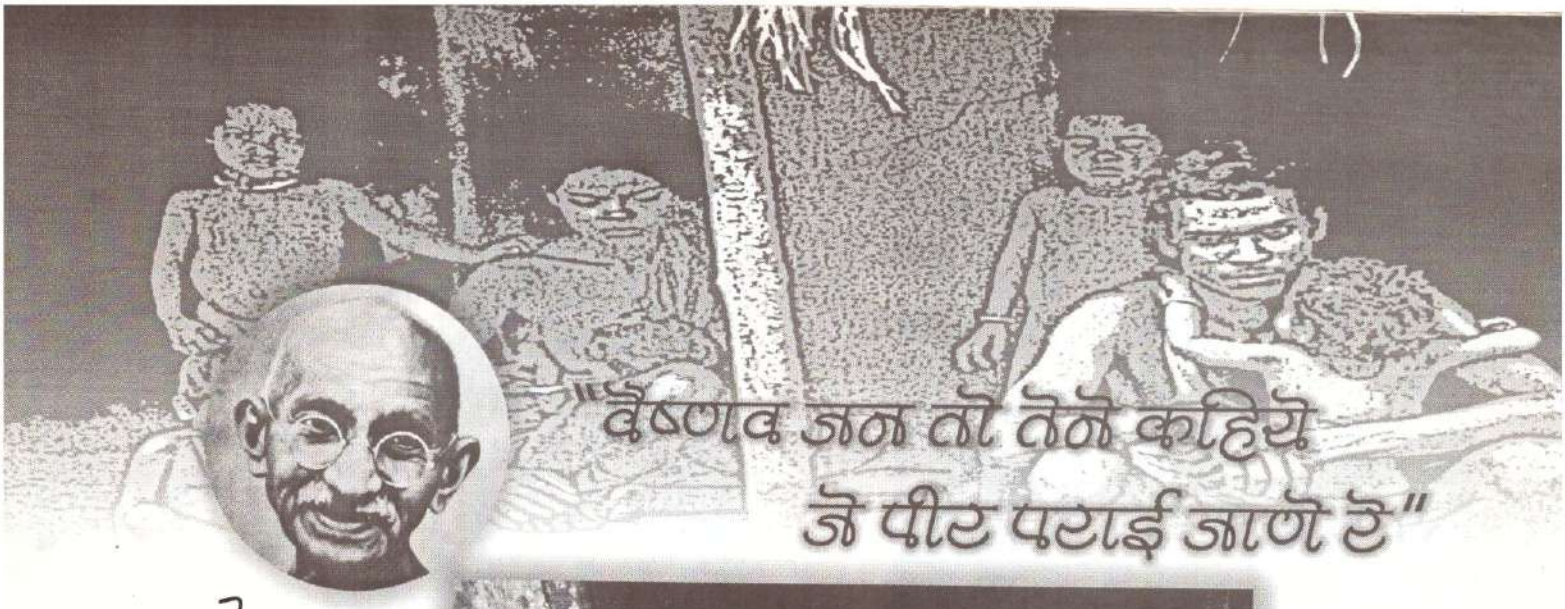

3

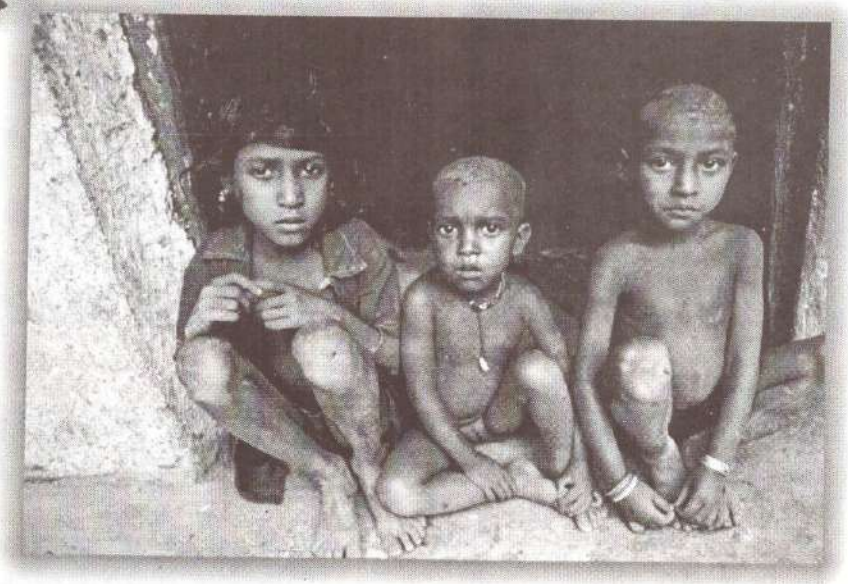

नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ वीमेन चाइल्ड एंड यूथ डेव्हलपमेंट गत एक दशक से डिंडौरी जिले के अमरपुर व बैगाचक क्षेत्रों में बैगा आदिवासियों के बीच कार्यरत है। अभावग्रस्त 30 गावों में सामाजिक चेतना के तथा भू-जल संरक्षण के कार्य किये गये हैं। अन्न कोष, बीज कोष तथा ग्राम कोष बनाए गये हैं, जिससे भुखमरी, पलायन तथा साहूकारों पर निर्भरता रोकी जा सके।

महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज्य अवधारणा को साकार करने का विनम्र प्रयास न्यू सीड की टीम श्री राजेश मालवीय के नेतृत्व में कर रही है। गत एक दशक से परिवर्तन की इस प्रक्रिया का सिलसिलेवार चित्रण मैंने किया है। समय - समय पर इसे कलमबद्ध भी किया है। इसी प्रक्रिया का सारतत्व इस पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत है।

रजनीकांत यादव
फोटो जर्नलिस्ट, डॉक्यूमेंट्री फोटोग्राफर
1040/1 मयूर भवन, आमनपुर, जबलपुर-482001, मध्यप्रदेश

संपादकीय

बैगाचक और इससे पहले अमरपुर (दोनों डिण्डोरी जिले के आदिवासी बहुल इलाके हैं) में नेशनल इस्टीट्यूट ऑफ वूमेन चाइल्ड एण्ड यूथ डेवलपमेंट (इसे हम संक्षेप में न्यू सीड कहेंगे) ने बैगा आदिवासियों के उत्थान हेतु चलाये गये सघन कार्यक्रमों में अनेक योजनाओं का सफल क्रियान्वयन किया है, इस पुस्तिका में हम बैगाचक के सामाजिक ,आर्थिक और भौगोलिक परिवेश को समझेंगे तथा संस्था के कार्योंसे आये सकारात्मक परिर्वतनों का लेखा-जोखा भी जानेंगे।

बैगाचक 52 आदिवासी गावों की एक चकबंदी है जो ब्रिटिश राज ने बनाई तथा आजादी के 54 वर्षों बाद अब तक सरकारी रिकार्ड बुक में कायम है ।घुमंतू बैगा जाति को झूम खेती करने से रोकने हेतु अंग्रेजी शासन ने बैगाओं को यहां बसाया था। एक सीमा में बांधकर बैगाओं को बाहरी दुनिया से काट दिया गया इस कारण मुख्य धारा से जहांअन्य जातियां जुड़ पाईं वहां बैगा नहीं जुड़ पाया, उल्टे बाहरी परिर्वतनों से कटकर अपने परिवेश में सिमट कर रह गया । वर्तमान में इनके सामने आया जीवन यापन का भीषण संकट इन्हीं परिस्थितियों का परिणाम है।

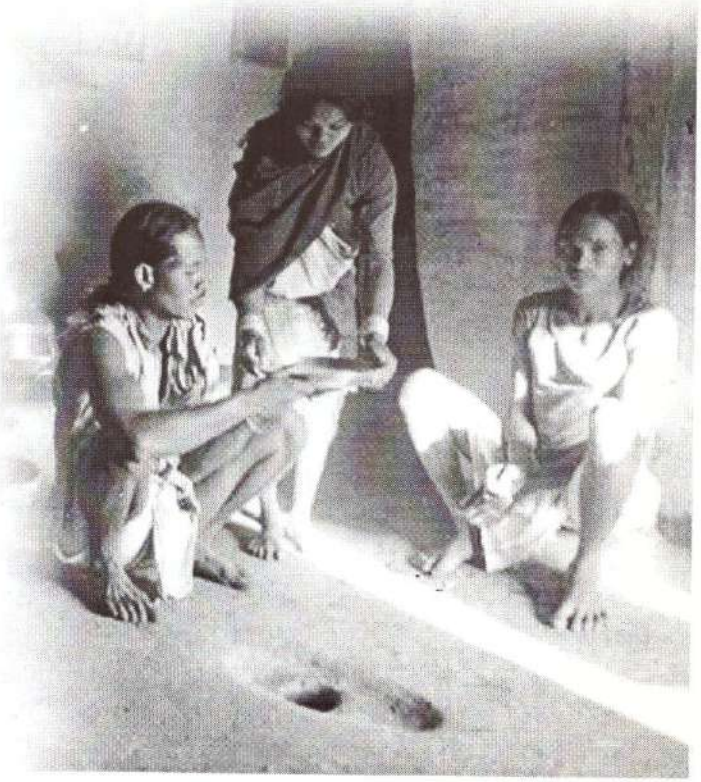

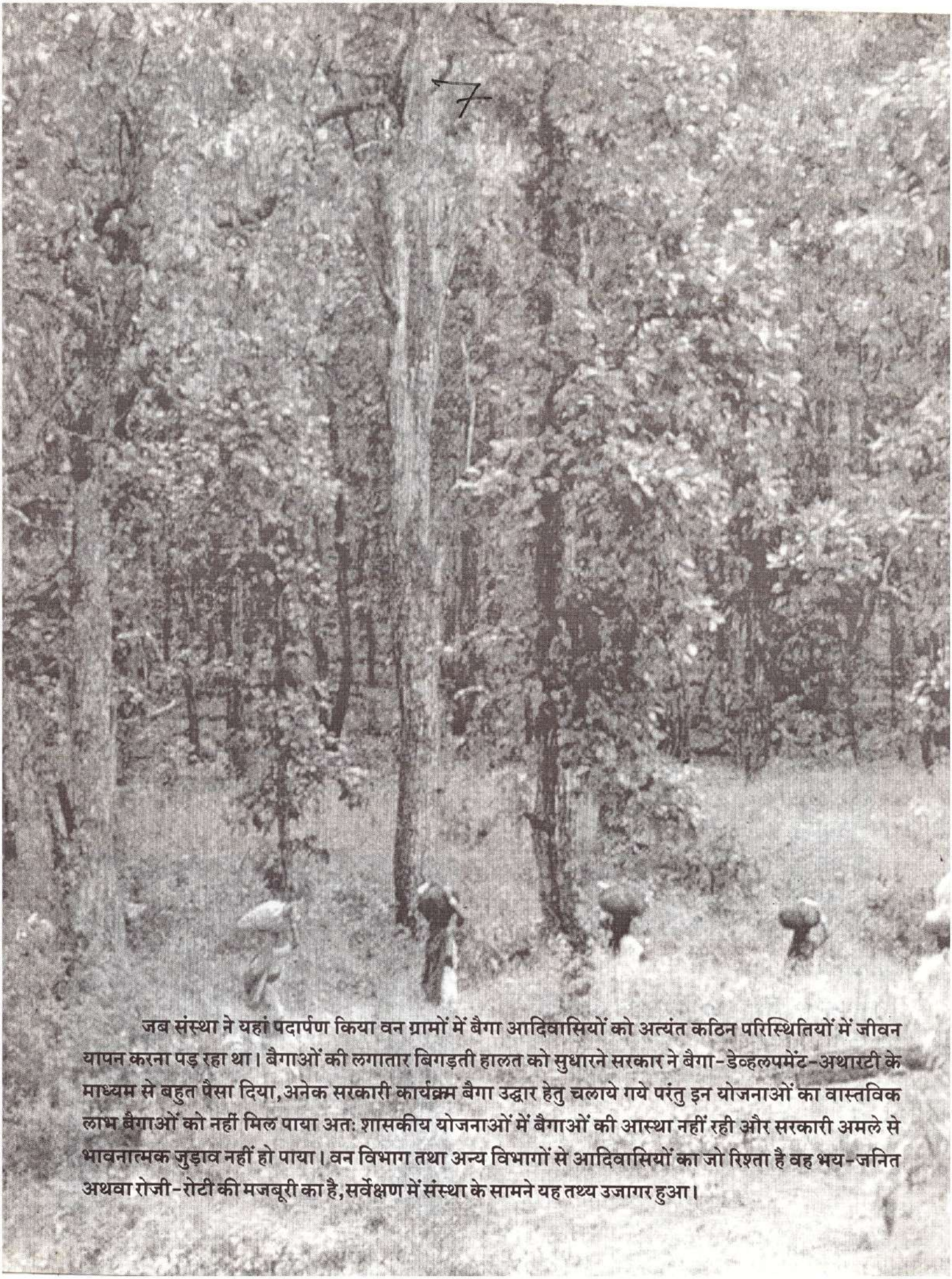

जब संस्था ने यहां पदार्पण किया वन ग्रामों में बैगा आदिवासियों को अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन करना पड़ रहा था। बैगाओं की लगातार बिगड़ती हालत को सुधारने सरकार ने बैगा-डेव्हलपमेंट-अथारटी के माध्यम से बहुत पैसा दिया, अनेक सरकारी कार्यक्रम बैगा उद्धार हेतु चलाये गये परंतु इन योजनाओं का वास्तविक लाभ बैगाओं को नहीं मिल पाया अत: शासकीय योजनाओं में बैगाओं की आस्था नहीं रही और सरकारी अमले से भावनात्मक जुड़ाव नहीं हो पाया। वन विभाग तथा अन्य विभागों से आदिवासियों का जो रिश्ता है वह भय-जनित अथवा रोजी-रोटी की मजबूरी का है, सर्वेक्षण में संस्था के सामने यह तथ्य उजागर हुआ।

चित्र परिचय :

1. अन्न हेतु थाड़पथरा ग्राम आया केन्द्राबहरा गांव का बैगा (वर्ष 1996)
2. सिधौली बैगाटोला में कंटूर बंडिंग (वर्ष 1996)
3. बैगाचक के तांतर गांव में मेड़बंदी का कार्य (वर्ष 1998)

इसी दौरान सन् 1996-97 में पूरे बैगाचक में अन्न की बेहद कमी हो गई , जब मैं थाड़पथरा में चित्र ले रहा था पास के केन्द्राबहरा गांव के लोग थाड़पथरा में अनाज मांगते घर-घर घूम रहे थे कारण उनके गावों में खद्यान समाप्त हो गया था। लोग भूख के कारण पलायन कर रहे थे। अन्न की कमी का मुख्य कारण बैगाओं के कब्जे की जमीन में पर्याप्त अन्न न हो पाना था।

पूरे क्षेत्र में कृषि योग्य उपलब्ध जमीन पथरीली ढलाने हैं , जहां पर्याप्त मिट्टी और नमी का अभाव है। कहावत है- दूबरे पे दो आषाढ़ - एक तो बीमारी ऊपर से भुखमरी भी -ऐसे में काम के बदले अन्न योजना लेकर आई संस्था दरिद्रनारायण बन गई। इस योजना के अंतर्गत बैगा आदिवासियों को उनकी खेती की जमीन सुधारने, जल स्त्रोतों के सुधार अथवा निर्माण कार्य तथा मेड़बंदी के लिये अनाज और मजदूरी दी गई । नतीजा अच्छा निकला। पलायन रुक गया तथा अन्न और पैसा,थोड़ी ही मात्रा में सही, बैगा परिवारों के पास आने लगा। संस्था से उनके वास्तविक रिश्तों की शुरूआत यहीं से हुई । सरकारी अमला जो काम वर्षों में भारी-भरकम बजट से भी नहीं कर पाया संस्था ने पर्दापण के 1 वर्ष में ही उसकी शुरुआत कर दी। यदि वन विभाग अथवा अन्य कोई विभाग सच्ची मंशा रखकर कुछ करना चाहता है तो उसे संस्था की कार्य पद्धति का सम्मान करना होगा और इससे सीखना भी होगा। एक केस स्टडी के दौरान मैंने थाड़पथरा गांव के लामू बैगा परिवार के चित्र लिये हैं। अलग-अलग वर्षों में लिये गये ये चित्र इस परिवार की माली हालत में आये सुधार को दर्शाते हैं ।

आदिवासी समाज में महिलाओं का कार्य बड़ी मेहनत का होता है जो परिवारिक आय का मुख्य स्त्रोत भी होता है। घटते वनों के कारण महिलाओं को वनोपज एकत्रित करने हाड़तोड़ मेहनत करना पड़ रही है, बच्चों की देखभाल और भोजन बनाने का अतिरिक्त बोझ भी उन पर होता है। इस दारुण परिस्थिति में फंसी आदिवासी स्त्रियों को संगठित करना तथा उनकी कार्यकुशलता को बेहतर करने के सफल प्रयास संस्था ने अपने सभी कार्य क्षेत्रों में किये हैं। स्थानीय संसाधनों पर आधारित कम मेहनत के कार्य तथा सामुदायिक खेती के प्रयोग सफल रहे हैं।

13

बैगाचक में किये गये कार्यों की क्रमवार सचित्र प्रस्तुति

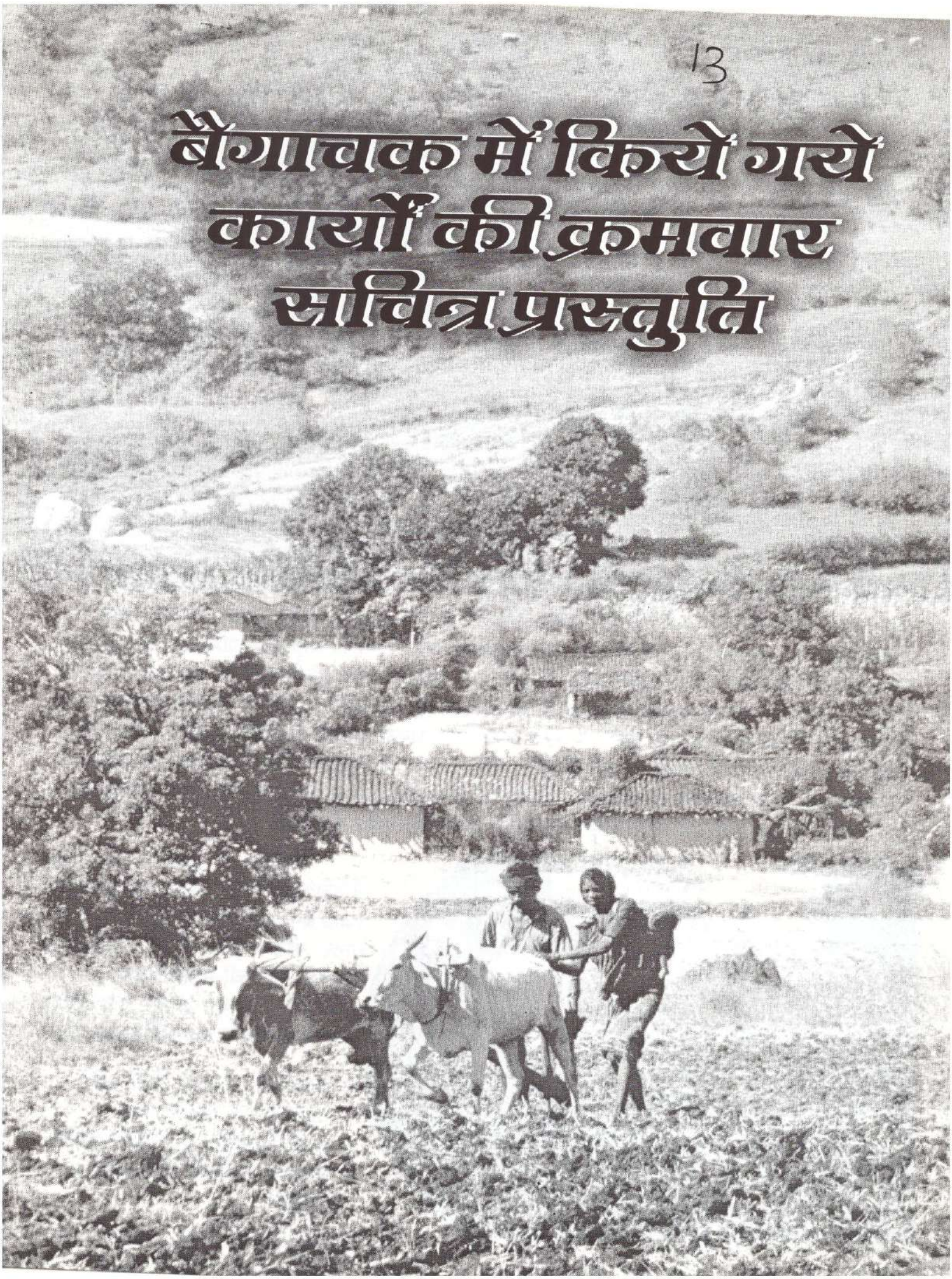

भू-जल संरक्षण कार्यों से आया परिवर्तन -स्थानीय बीजों को प्रोत्साहित किया गया,गांवों में बीज बैंक बनाकर इनकी उपलब्धि सुनिश्चित की गई। सन् 2000 आने तक यानी सिर्फ 3 वर्षों में थाड़पथरा,सेराझर और तांतर गांवों में धान की फसल में वृद्धि तथा नमी वाली जमीन के टुकड़ों में गेहूँ की फसल लिया जाना संभव हो गया था। इसके परिणाम स्वरुप इन गांवों के अपने अन्न कोषों में पर्याप्त अन्न जमा हो गया था तथा प्रत्येक परिवार के पास खाद्यान हेतु पर्याप्त अनाज वर्ष भर जमा था। नकद कोष भी बढ़ गया। इससे पलायन रुक गया तथा साहूकार पर निर्भरता नहीं रही, हाड़-तोड़ मेहनत खासकर औरतों में कम हुई। सामूहिक मेहनत के रूप में प्राप्त राशि का आधा हिस्सा ग्राम कोष के रूप में जमा होते-होते एक बड़ी पूंजी बन गया जो सामाजिक व्यवहारों विवाह,दशगात्र आदि में अथवा आकस्मिक स्थितियों - बीमारियों, कृषि औजारों की,पशुओं की खरीद आदि कार्यों में इस्तेमाल किया जाने लगा।

1. सामुदायिक खेती
2. स्थानीय बीजों का प्रयोग
3. अन्नकोष ग्राम थाड़पथरा

महिला जाग्रति के कार्य - महिला सशक्तिकरण एक आम विषय है। आदिवासियों के संदर्भ में इसे महिला जाग्रति कहा जाये तो बेहतर होगा क्योंकि पूरा समाज ही अशक्त हो गया है, पुरुष-महिला सभी। बैगा जाति में महिलाओं का पर्याप्त सम्मान होता है, मातृकामूल के आदिवासी समाजों में महिलाओं को पर्याप्त अधिकार हैं-स्वयंवर का भी। हाल के वर्षों में काम करने की परिस्थितयों में व्यापक परिर्वतन हो रहे हैं,तथा वनों के विरल हो जाने से शारीरिक श्रम बढ़ रहा है। समाज की बैठक में महिलायें खुलकर नहीं बोलती,परंतु घर चलाने में स्वैच्छिक सहभागिता महिला की होती है। गत 5 वर्षों के प्रयास से महिलाअें बैठक में आने लगी हैं - अपनी बात कहती हैं। महिला मंडल की बैठक में साफ-सफाई, शुद्ध पानी का इस्तेमाल,नशाबंदी के प्रयास जैसे मुद्दों पर चर्चा होती है। इसका अच्छा परिणाम भी रोजमर्रा के जीवन में देखने मिल रहा है। घरों में पर्याप्त अन्न,समाज में बेहतर तालमेल तथा संस्था की सभी योजनाओं की सफलता में महिला जाग्रति की भूमिका रही है। सेराझर गांव में महिलाऐं गांव के आस-पास के वन क्षेत्र की सुरक्षा हेतु भी तत्पर हैं ,कई मौकों पर वन विभाग के क्रिया-कलापों का विरोध महिलाओं ने खुलकर किया है । इस मुद्दे पर उभरे मतभेद को किस तरह शांति पूर्वक सुलझाया जाये यह कोशिश जारी है तथा संस्था मध्यस्थता करने तैयार है।

केन्द्र सरकार के "राष्ट्रीय महिला आयोग" की सदस्या सुश्री अनुसुइया उईके NIWCYD कार्यालय में, संस्था प्रमुख श्री राजेश मालवीय संस्था के कार्यों से उन्हें अवगत कराते हुए

प्रशासन, वन विभाग और बैगा आदिवासी - न्यु सीड के पर्दापण के समय वन विभाग और आदिवासियों के बीच शासक और शासित का रिश्ता ही था जो भय, मजबूरी और बेबसी से उपजा था। वन विभाग का कुल मकसद कूप कटाई के समय बैगाओं का मजदूरों के रूप में उपयोग करना था, सड़क निर्माण, ट्रेंचिंग, मार्किंग आदि कामों में अस्थाई मजदूरी भी बैगा पा लेते थे। बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग-थलग कर दिया गया बैगा समुदाय वन विभाग के अमले से भयभीत रहता था। प्रशासन से संपर्क होना बहुत दूर की बात थी, एक बीट गार्ड ही इनके लिये सर्वोच्च सत्ता हुआ करता था। इसके आगे संपर्क की या संवाद की कल्पना भी बैगा नहीं कर सकता था। संस्था की मध्यस्थता से गत 5 वर्षों में प्रशासन, वन विभाग और बैगा-समुदाय के बीच संवाद की स्थिति बनी है। अनेक कार्य शालाओं में प्रशासन के अधिकारियों ने सीधे ही बैगा स्त्री-पुरुषों से बातचीत की है। डिण्डौरी में सन् 2000 में हुआ बैगा- सम्मेलन इस दिशा में बहुत उपयोगी रहा जिसमें एस.डी.एम.स्तर के अधिकारियों ने बैगाओं से सीधे संवाद किया। भविष्य में संस्था, वन विभाग और बैगा आदिवासी मिलकर विकास कार्य करेंगे यह आग्रह हाल ही में हुई संयुक्त बैठक में सी.एफ.श्री सूद तथा संस्था प्रमुख श्री राजेश मालवीय दोनों का था। 23-24 मार्च सन् 2002 को संयुक्त सर्वे तथा बैठक का कार्यक्रम चाड़ा क्षेत्र में आयोजित हुआ। 5 वर्ष पहले जो अजनबी थे अब मिलकर कार्य कर रहे हैं, इससे बड़ा परिवर्तन क्या हो सकता है!

डिंडौरी में गत 15-16 अप्रेल 2003 को सामुदायिक वन प्रबंधन पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। भोपाल स्थित इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मेनेजमेन्ट से आमंत्रित प्रोफेसर बिश्वास ने न्यूसीड के कार्यकर्ताओं को तथा आमंत्रित बैगाओं को सामुदायिक वन प्रबंधन की विधिवत जानकारी दी। प्रश्नोत्तर के दौर में कार्यकर्त्ताओं ने प्रश्न एवं प्रोफेसर ने उनका समाधान किया। इस अवसर पर वन विभाग की ओर से रेंजर श्रीवास्तव जी भी उपस्थित रहे।

पीने के पानी और निस्तार हेतु स्वच्छ जल की उपलब्धि बढ़ाने के कार्य-पीने के पानी और निस्तार हेतु बैगा आदिवासी झिरिया का प्रयोग करते हैं। 5 से 6 फुट गहरे तथा 6 से 12 फुट आयताकार गड्ढे को चारों ओर लकड़ी से बांध दिया जाता है,इसमें पहाड़ी का पानी झिरकर आता है-यही झिरिया है। हाल के वर्षों में वन विरलता के कारण हुए भूमि कटाव से झिरिया जल प्रदूषित होने लगा है इससे पेट की बीमारियां बढ़ गई हैं। झिरिया के आस-पास से कीचड़ को हटाने,नहाने-धोने के कार्य झिरिया के निकट न करने जैसे उपायों से तथा झिरिया की साफ सफाई करने से थाड़पथरा गांव की बड़ी झिरिया अब साफ पानी दे रही है। इसी गांव में शुद्ध पेय जल की पर्याप्त उपलब्धि हेतु पक्के कुंए का निर्माण भी संस्था ने करवाया जिसका उपयोग थाड़पथरा के अलावा पास के गांवों के लोग भी करते हैं।निस्तारी जरूरत हेतु तालाबों के तट बंधों को ठीक करना तथा नये तालाब बनवाने के कार्य भी किये गये। नालों को जगह-जगह रोककर पानी की उपलब्धता बढ़ाने केकार्य किये जा रहे हैं,इससे सिंचाई हेतु पर्याप्त जल मिलेगा जो रबी की फसल में नमी की मात्रा बढ़ायेगा।

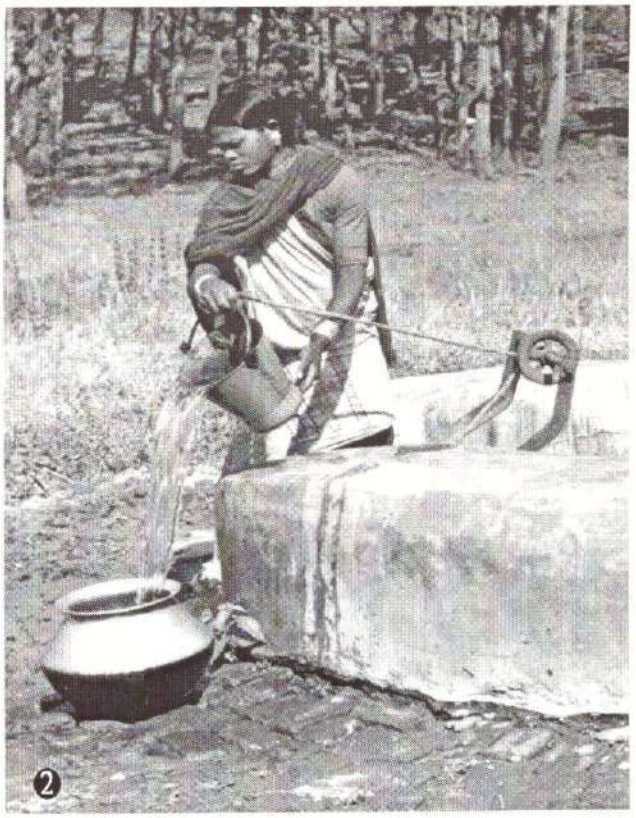

1- मेड़बंदी से रोका गया जल
2- शुद्ध पेय जल हेतु निर्मित कुआं
3- साफ झिरिया
4- निस्तारी जल हेतु तालाब निर्माण

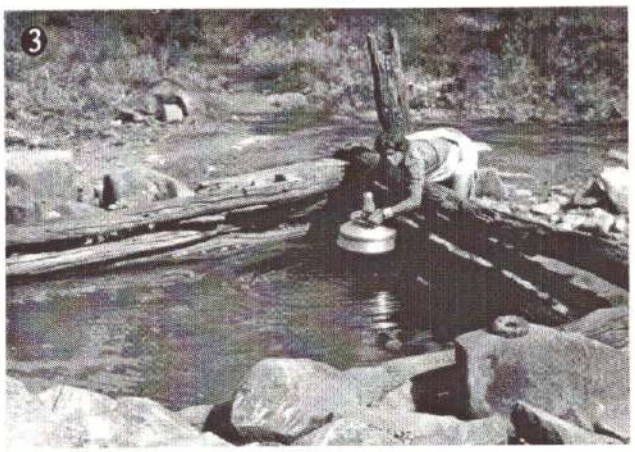

तुलाराम झारिया का एक साल

वनांचलों में आदिवासियों के बीच कुछ अन्य जातियों के लोग भी बसते हैं। हरिजन कृषक तुलाराम झारिया पत्नी और दो बच्चे जिला-डिंडौरी के अमरपुर ब्लाक में स्थित पिपरिया गांव के निवासी हैं। इस हरिजन परिवार की आजीविका का मुख्य साधन 4 एकड़ खेती की जमीन है। असिंचित 4 एकड़ में तुलाराम कितनी फसल ले पाता है और साल भर कैसे गुजारा होता है यह जानने की उत्सुकता मुझे थी। मोहगांव, जहां मैं ठहरा हुआ था उससे लगा हुआ है पिपरिया। रोज बैगान-टोला आते-जाते तुलाराम तथा उसकी पत्नी से राम-राम होती थी। नवंबर के पहले सप्ताह में वे लोग मोहगांव से लगे अपने जमीन के टुकड़े पर पक चुकी अपनी धान की फसल काटने में व्यस्त थे। एक दिन शाम को कैमरा टांगे मै बैगान टोला से लौट रहा था, तुलाराम की पत्नी जो सिर पर धान की कटी बालियों का गट्ठा उठाये थी मुझे संबोधित कर जोर से बोली-भैया एक फोटो हमारी भी खींच लो। खेत में तरतीब से रखी धान की बालियों की गड्डियों के साथ मैने उसका चित्र खींचा। थोड़ी देर पश्चात सिर-बोझ के साथ वह धर चली गई। मैं और तुलाराम खेत की मेड़ पर बैठकर बतियाने लगे। मैं जानना चाहता था कि तुलाराम की साल भर की गतिविधियां क्या होती है, खासकर खेती बाड़ी के कार्यों को बताने का आग्रह मैंने किया।

जो जानकारी मिली वह संक्षेप में इस प्रकार है :-

आषाढ़ में (वर्षा पूर्व) खेत तैयार करते हैं, पत्नी भी करती है काम, बच्चे स्कूल जाते हैं। सावन में वर्षा होने के बाद अपने खेत की निदाई-गुड़ाई, मेड़बंदी के साथ-साथ आसपास के खेतों में मिलकर मजदूरी भी करते हैं। पति-पत्नी दोनों मिलकर काम करते हैं, जिसका 5 कुड़े प्रतिदिन मेहनताना मिल जाता है। सावन, भादों, क्वांर, कार्तिक इन चार महीनों मे कुल मिलाकर 60 दिन की मजदूरी से 3 क्विंटल अनाज कमा लेते हैं। चार क्विंटल के लगभग अपने खेत का धान हो जाता है, दीपावली के आस-पास। घर के आस-पास की बाड़ी में 50-60 किलो मक्का भी पैदा कर लेते हैं। कार्तिक में धान कटाई के बाद ही (नवंबर में) गेहूंबोवाई की तैयारी, खेत में हल चालन और बीज डालना शुरू कर देते हैं। कार्तिक, अगहन और पूस, माघ इन चार महिनों के बाद फागुन में (होली के आस- पास मार्च में) गेहूंकी दूसरी फसल तैयार हो जाती है। पर कितना गेहूं होगा यह वर्षा पर निर्भर करता है। यदि फागुन से थोड़े पहले वर्षा हो गई तो 3-4 बोरे (क्विंटल) गेहूं अपना खुद का हो जाता है पर कभी पाला पड़ गया तो फसल जलकर आधी ही रह जाती है। गेहूंबोवाई के बाद इन्हीं 4 महीनोंमें बड़ी जोत के किसानों के यहांमजदूरी करके पति-पत्नी 2 क्विंटल गेहूं और कमा लेते हैं।

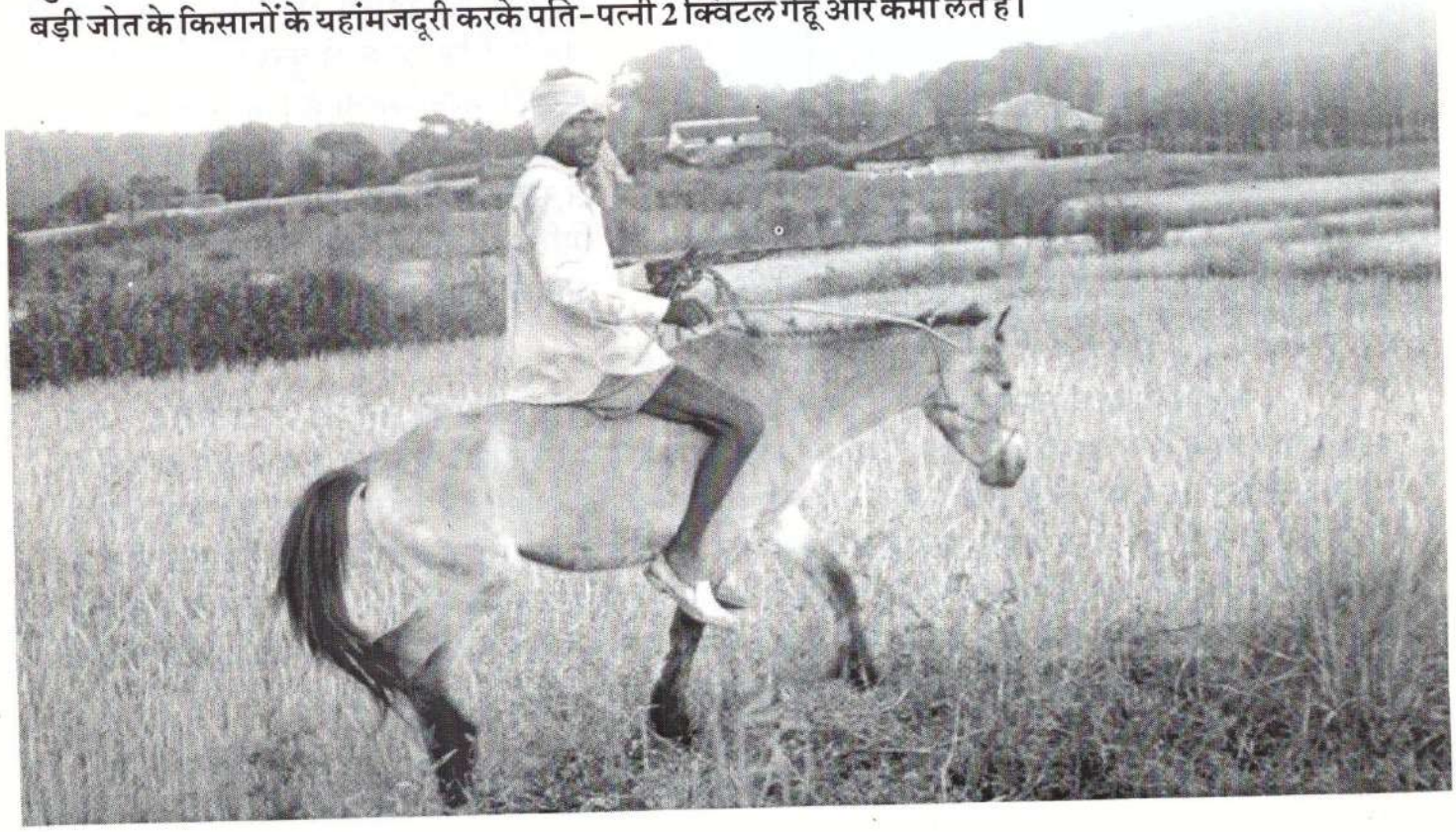

जंगल छिन गये घट गई वनोपज खुद की जमीन थी ही कहां, जंगल के यायावरों की ! ये तो आदिवासी के सिरहा थे - अलमस्त पर अब जंगल के किनारे, बस्ती से दूर आधे जंगल के भीतर आधे बाहर विमूढ़ ये भूमि पुत्र - ये बैगा आदिवासी छोटे-छोटे टोलों में बस गये हैं, हाड़तोड़ मेहनत से जी रहे हैं, चुपचाप मर रहे हैं। कैसे ? हंसते-रोते बैगान टोला के मोहन मरावी से जानिये....

बैगानटोला का मोहन मरावी

मध्य प्रदेश के आदिवासी बाहुल्य वाले डिंडौरी जिले में अमरपुर ब्लाक ज्यादातर पहाड़ियों- जंगलों वाला क्षेत्र है। बैगानटोला अमरपुर ब्लाक में बसा एक आदिवासी वन ग्राम है। बैगा आदिवासियों के 22 परिवार 80 वर्ष पहले आमगांव से यहांआकर बस गये थे। 34 वर्षीय मोहन बैगा यहीं पैदा हुआ। मोहन के परिवार में पत्नी और दो बच्चे हैं।

परंपरा से बैगा जंगल के अंदर किसी जल स्त्रोत के किनारे बस्ती बनाते हैं जहां पहाड़ी ढ़लान खत्म होती हो ऐसी समतल पठारी जमीन पर। इलाके के अन्य पारंपरिक गावों से अलग-थलग अपनी बस्ती बसाते हैं बैगा। बैगानटोला की बसाहट भी बड़ी सुरम्य है। टोले के बाहर एक विशाल बरगद का पेड़ है और पीछे से शुरू होता है पहाड़ियों का सिलसिला जो क्षितिज तक चला गया है। इसी पहाड़ी की लकड़ी, पेड़ों के पत्ते, कंद-मूल-फल और जड़ी-बूटी बैगानटोला के आदिवासी परिवारों के भरण पोषण का स्त्रोत पिछली एक शताब्दी के समय से रहा आया है। अपनी जरूरत के लिये बैगा पशुपालन भी करते आये हैं। कुछ बैगाओं के यहां तो बहुत बड़ा पशुधन हुआ करता था। बैगानटोला में अब सिर्फ बकरियांऔर मुर्गियां दिख पड़ती हैं। खेत जोतने को पिपरिया मोहगांव आदि के किसानों से बैल बैगा ले आते हैं और वर्षा पर आधारित कोदों, कुटकी, मोटा चावल पहाड़ी ढ़लानों पर या पठार की साफ की गई जमीन पर बोते हैं।

गर्मियां खतम होने को थीं अतः संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने 6 क्विटल धान के बीज की व्यवस्था की तथा बचे हुए 1 महीने में संस्था के कार्यकर्त्ता तथा बैगाओं ने मिलकर इन पहाड़ी ढलानों की मेड़बंदी की। बारिश के पानी के साथ मिट्टी का रुकना शुरू हुआ और तीसरे साल यानी 1999 की बरसात में 5 से.मी. तक काली मिट्टी मेड़बंदी वाले खेतोंके निचले हिस्से में जमा हो गई है। इस साल नमी भी पहले से ज्यादा दिनों तक बारिश बाद रही और अधिक धान इस बार हो पाया है और बहुत ऊंचाई में कोदों- कुटकी चने की फसलें इस साल बैगाओं ने ली हैं।

इस बीच बैगाओं की समिति ने रामकोठी बनाई है (रामकोठी याने अनाज भंडारण की व्यवस्था)इसमें पिछले साल (95) की फसल में से 30 क्विंटल अनाज उनने जमा किया था पर धीरे-धीरे यह धान खाने के उपयोग में आ गया। 95 की फसलों से साहूकारों- किसानों से की उधारी भी चुकता हो गई और 96 की फसल के बाद रामकोठी में 40 क्विंटल जमा करने का उनका इरादा है। बैगनटोला में हांलाकि जीवन संधर्ष बरकरार है पर बैगाओं में अब आशा की लहर दौड़ रही है। अपने आप में विश्वास बढ़ा है क्योंकि संस्था के कारण जहां इनका शोषण रुका है वहीं रामकोठी के अनाज का सहारा भी है ग्रेन बैक में जो उनका अपना है उन्हें 1 कुड़े (5 कि.ग्रा.) के बदले सवा कुड़े (6 कि.ग्रा.) अनाज जमा करना होता है ताकि खाने के बाद भी कुड़े पर 1 कि.ग्रा. बीज बच जाये। सन् 2002-2003 के सूखे की स्थिति में भी उन गावों में जहां भू-जल संरक्षण का कार्य हुआ है वहां अन्य गावों की तुलना में बेहतर उपज हुई है।

आखिर क्या कारण है कि बैगा लंगोटी में आधे भूखे रहकर भी अपना परिवेश छोड़ना नहीं चाहते ? कैसी है इनकी सामाजिक व्यवस्था ? बातचीत करके जानना बड़ा मुशिकल था क्योंकि ज्यादातर बैगा समूह सुबह से शाम तक घरों में नहीं मिलते। औरतें बात नहीं करतीं फिर भाषा की समस्या भी आती है। मोहन बैगा से पिछले एक वर्ष में कुछ पहचान हो गई थी। उसके परिवार का एक चित्र जो पिछली यात्रा में खींचा था इस बार उसे दिया और उसके गांव परिवार के बारे में जानना चाहा उसने अगले दिन आने को कहा। दूसरे दिन मोहन खेत पर था नांगर फांदने में व्यस्त तो वहांबात करने की गुंजाइश नहीं हो पाई। बगल के खेत मेंकाम कर रहे एक बैगा दंपत्ति का बुवाई करते हुए कुछ चित्र बड़े ही अच्छे मिल गये। बैगाइन पीठ पर बच्चा बांधे थी और एक लड़की साथ- साथ खेत में चल रही थी शाम को फिर बैगानटोला गया और मोहन के घर के सामने पड़ी लकड़ियों के ढेर पर बैठकर पूरे घंटे भर उसका इंतजार किया तब कहीं मोहन सिर पर चारा रखे दूर से आता दिखा पास आने पर उसका एक चित्र खींचा घर के सामने रेडीमेड कमीज मिल के बने कपड़े की और पैर में जूते, पिछली बार जब मैंनें इस परिवार का चित्र खींचा था मोहन अपनी परंपरागत बंडी धोती वाली पोशाक में नंगे पैर था। चारा रखकर हम लोग मोहन के उस 1/4 एकड़ के टुकड़े पर गये जहां पिछली बार पूरे परिवार का चित्र धान रोपाई के समय बरसती बरसात में मैने खींचा था। धान की फसल कट चुकी थी और खेत में चने के बहुत ही छोटे- छोटे पौधे उग रहे थे। यहीं मोहन से मैनें कुछ प्रश्न उसके परिवार और टोले के बारे में किये 1 घंटे के वार्तालाप का सारांश प्रस्तुत है :-

प्र. जंगल के पास ही रहना क्यों पसंद है ?

उ. यहां हमको पत्ता लकड़ी बक्कल (पेड़ की छाल) मिलती है। धंधे के लिये बाहर नहीं जाना पड़ता। बाहर के लोग साहब हैं, उनसे डरते हैं। पुलिस का डर भी है। टोले में एक बार झगड़ा हुआ था एक ने रिपोर्ट कर दी तो पुलिस आकर 3-4 लोगों को हथकड़ी डालकर ले गई। पटेल ने जमानत से छुड़ाया, तब से पुलिस से डरते हैं।

प्र. खाने की कमी हो जाने पर क्या करते हो ?

उ. जंगल की लकड़ी बेचकर काम चलाते हैं। अटकी में सिधौली जाकर पंडित जी से 1 कुड़ा धान लाते हैं, बदले में फसलें होने पर 1.5 कुड़ा लौटा देते हैं।

प्र. आपकी हालत वैसी है या सुधरी है ?

उ. पिछले सालों में हालत ज्यादा बिगड़ गई है, हमारी जनसंख्या भी बढ़ी है।

श्री राजेश मालवीय

संक्षिप्त परिचय : 9 जून 1958 को जन्मे श्री राजेश मालवीय ने B.Sc.,M.Com करने के बाद, गांधी विचार धारा पर डिप्लोमा किया ।समाज सेवा के क्षेत्र में आने से पूर्व नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक कोआपरेशन तथा बाल विकास (NIPCCD)नई दिल्ली, इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मेनेजमेंट आणंद तथा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेंट (NIRD)हैदराबाद में रहकर, ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने की ट्रेनिंग ली।

गत 20 वर्षों से सामाजिक तथा आदिवासी विकास क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। ठक्कर बापा द्वारा स्थापित भारतीय आदिम जाती सेवक संघ जो गत 50 वर्षों से आदिवासियों के बीच हैं, उनसे भी सक्रिय जुड़ाव है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वीमेन चाइल्ड एंड यूथ डेवलपमेंट के उपाध्यक्ष एवंप्रमुख कार्यवाहक के रूप मेंसंस्था के प्रेरणा स्त्रोत हैंइनके मार्ग दर्शन में इंस्टीट्यूट ने महाराष्ट्र,मध्यप्रदेश और छत्तिसगढ़ केआदिवासी बहुल परंतु सामाजिक - आर्थिक दृष्टी से पिछडे क्षेत्रों में वंचितों के विकास कार्य का एक आदर्श प्रस्तुत किया है । इसी संदर्भ में मैग्नम फाउंडेशन ने श्री राजेश मालवीय को समाज के सबसे गरीब और वंचित वर्ग के बीच कार्य हेतु सन् 2001 का "मैग्नम राष्ट्रीय पुरुस्कार" देकर सम्मानित किया है।

श्री राजेश कुमार मालवीय से संपादक की वार्ता का सारांश

01. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वूमेन चाइल्ड एंड यूथ डेवलपमेंट यह नाम क्यों चुना -

महिलाओं के एकीकृत विकास तथा उनकी विकास प्रक्रिया में भागीदारी हो व समाज में प्रत्येक बच्चे बालक/बालिका को बचपन की आवश्यक सुविधा व विकास का अवसर मिले व युवकों को रचनात्मक कार्यों के प्रति प्रेरित करना, समयानुसार सामाजिक मुद्दों के प्रति उनमें दायित्व की चेतना लाने व उसके प्रति उनमें संवेदनशीलता निर्माण करना इत्यादि सोच के आधार पर संस्था का नाम नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वूमेन चाइल्ड एंड यूथ डेवलपमेंट रखा गया।

02. आपका कार्यक्षेत्र, कहां क्या करती है संस्था -

संस्था का पंजीयन अखिल भारतीय स्तर पर किया गया तथा संस्था वर्तमान में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र के विदर्भ आदिवासी दुर्गम क्षेत्रों में कार्य कर रही है। संस्था प्रमुख रूप से आदिवासी क्षेत्र उसमें से भी दुर्गम कठिन क्षेत्र को कार्य क्षेत्र के रूप में प्राथमिकता देती है।

03. आपने स्वयं जनसेवा का क्षेत्र क्यों चुना, क्या प्रेरणा थी -

मेरा बचपन, प्राथमिक शिक्षा तथा माध्यमिक शिक्षा का कुछ भाग आदिवासी क्षेत्र अंचलों में बीता। मेरे बड़े पिता जी का पूरा जीवन आदिवासी क्षेत्र में शिक्षा विभाग में व्याख्याता प्राचार्य के रूप में कार्य करते हुए व्यतीत हुआ। वे विद्यालयीन समय के बाद अधिकांश समय आदिवासी गांवों में जनचेतना, शराब पाबंदी तथा आदिवासी ग्राम स्वावलंबन के दिशा में पहल करते रह। उस समय मैने उनके साथ इस कार्य का अनुभव प्राप्त किया जहां इस कार्य के प्रति थोड़ी समझ बनी। एम.काम. की शिक्षा के बाद स्वतंत्रता सेनानी तथा आदिवासी सेवक संघ के आजीवन सदस्य श्री भास्कर नारायण माचवे के माध्यम से कार्यकर्ता प्रशिक्षण नागपुर में शामिल होने का अवसर वर्ष 1980 में प्राप्त हुआ। इसी दौर में गांधी विचार धारा के प्रर्वतक डा. एस. एन. सुब्बाराव द्वारा आयोजित राष्ट्रीय युवा नेतृत्व व श्रम शिविरों मेंभाग लेने का मौका मिला। यहीं से समाज सेवा का कार्य करने का पूरा निश्चय किया। इसके बाद नौकरी के लिये मैने कोई पहल नहीं की।

04. 15 वर्ष से अधिक समय हुआ संस्था को कार्य करते, शुरूआत कैसे की और अब किस मुकाम पर हैं-

संस्था ने सन् 1982-83 से कार्य की शुरूवात की ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों में महिला व युवा नेतृत्व शिविरों से यह कार्यक्रम 1989-90 तक चला व इन्ही शिविरों से ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों में से कई युवक-युवती संस्था के साथ सामाजिक कार्यों से जुड़े। संस्था ने ऐसे युवक- युवती हेतु सामाजिक कार्य का विशेष प्रशिक्षण दिया व उन्हे आदिवासी क्षेत्रों में कार्य के लिये जोड़ा संस्था ने वर्ष 1990-91 से 1994-95 तक इस कालावधि में मध्यप्रदेश के अमरपुर ब्लाक के 20 गांव मे तथा महाराष्ट्र विदर्भ के नागपुर, यवत माल व भंडारा जिले के 15 गांव में सामाजिक, शैक्षणिक जाग्रता बाल कल्याण कार्यक्रम आदिवासियों की मजदूरी का प्रश्न, पीने को पानी की समस्या आदि मुद्दों पर कार्य करती रही। इसी दौरान संस्था ने विशेषतः म.प्र. के आदिवासी अंचलों की परिस्थितियों का अध्ययन किया। माईक्रो प्लान तैयार किये। जिसमें आदिवासियों के उदर निर्वाह, शोषण के मुद्दे ,वन ग्रामों की एक चुनौती के रूप में काम आई, यहीं से संस्था ने समस्याएं आदिवासी ग्रामों के सशक्तीकरण के कार्यक्रमों की शुरुवात वर्ष 1995-96 मंडला जिला मध्य प्रदेश के (वर्तमान डिंडौरी जिला) बैगाचक क्षेत्र से शुरुवात की। संस्था वर्तमान में उपरोक्त मुद्दे, पर डिंडौरी,मंडला,जबलपुर,बैतूल(म.प्र.)तथा दुर्ग, बस्तर तथा कांकेर छत्तीसगढ़ के लगभग 200 गावों में कार्य कर रही है। इसके अलावा संस्था समाज में उपेक्षित बालक/बालिकाओं तथा महिलाओं के न्याय व उनके सशक्तीकरण व विकास के कार्य संचालित कर रही है।

05. डेढ़ दशक के लंबे कार्य काल में किन मुसीबतों, अवरोधों को झेला -

विशेषत : आदिवासी वन ग्रामों में वन विभाग द्वारा प्रारंभ में कार्य में वन ग्रामों के नियम कानून को लेकर गतिरोध लाया गया जिसे दूर करने में कई दिक्कतें आई। शोषक वर्ग ने आदिवासियों को सहकार्य न करने के हथकंडे भी अपनाये उदाहरण जब लोगों ने जमीन सुधार का कार्य शुरू किया तो उन्हे यह गुमराह किया गया कि संस्था जो कार्य के लिये मदद कर रही है, जमीन छीन लेगी इससे लोग कई माह कतराते रहे। संसाधनों के अभाव के कारण भी बीच- बीच में दिक्कतें आती रहीं। किंतु दिक्कतों और मुसीबतों की परवाह न करते हुए हमने कार्य को प्राथमिकता दी। आज भी स्थानीय प्रशासन कार्यकर्ताओं व कार्यों को नजदीकी से समझ लेने सहकार्य करने के मानस में नहीं रहती, फिर भी आदिवासियों को संस्था के कार्य पर पूरी आस्था है।

06. कार्यकर्ता स्तर से प्रबंधन तक तालमेल कैसे बनता है -

किसी भी क्षेत्र में विकेंद्रीकरण जितना सबल होगा उतना ही कार्य की सुचारुता तथा व्यवस्थापन ठीक होगा। मैने यही प्रणाली कार्यकर्ताओं के जिम्मेदारी तथा भूमिकाओं के संबंध में की है। हर एक को अपने सुझाव रखने तथा समाज हित मेंप्रयोग करने की स्वतंत्रता है।

07. संस्था में एक बेहतर प्रजातांत्रिक व्यवस्था जिम्मेदारियों के साथ दिये जाने की प्रक्रिया देखी गयी है, यह प्रजातंत्री व्यवस्था कैसे चलती है -

मैने सामाजिक कार्यों में इन दो दशकों में यह अनुभव किया है कि व्यक्ति की कार्य की जिम्मेदारियों के साथ- साथ उसे कार्य के हर चरण में चाहे वह नीतिगत हो या अधिकार से संबंधित हो, कार्यकर्ताओं को समान भागीदार बनाना आवश्यक है। मैने कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी के साथ- साथ उतना ही कार्य के प्रति अधिकार तथा निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी देने का प्रयास किया है।

लामू का संकटमोचन

आमुख कथा

सन् 1997 आस-पास के अन्य गावों की तरह ही भीषण अन्न संकट से जूझ रहा बैगाचक का थाड़पथरा गांव, जब मै इस गांव केचित्र ले रहा था, कुछ बैगा पुरुष गांव में अन्न की तलाश में घूम रहे थे।पूछने पर पता चला कि केंद्राबहरा गांव के लोग हैं,केंद्राबहरा में तो अन्न का एक दाना भी नहीं बचा घरों में इसलिये टोली बनाकर अन्य गावों के समर्थ लोगों साहूकारों से अनाज मांगने निकल पड़े लोग। पर यहां थाड़पथरा में की स्थिति पहले से ही दयनीय है कौन देता इन्हे अन्न,खाली हाथ ही लौटना पड़ा उन्हें। थाड़पथरा गांव के पास एक छोटे से जल स्त्रोत का उद्गम है इसे लोग थाड़पथरा नाला कहते हैंऔर जो आगे चलकर सिवनी नदी में मिल गया है।एक युवा दंपत्ति के नाले में मछली पकड़ते हुए कुछ चित्र मैने लिये। 2-3 धंटों की कड़ी मेहनत से ये लोग 5-6 छोटी-छोटी मछलियां ही पकड़ पाये थे, पूछने पर पता चला कि ये लोग लामू बैगा के परिवार से हैं जो थाड़पथरा गांव मे रहता है,ये दोनों उसके लड़का-बहू हैं। घर में खाने को अन्न नहीं है अतः कंद- मूल और मछली यही जीवन का आधार है। मेरे साथ न्यूसीड प्रमुख राजेश मालवीय भी थे जिनके निमंत्रण पर मैं इस अनजान क्षेत्र को देख पा रहा था। जैसा मालवीय जी ने बताया था यहां हालात उससे भी बदतर थे, सेरिब्रम मलेरिया से बच्चे मर रहे थे और चारों ओर बीमारी भुखमरी का आलम था। लामू की युवा बहु और बेटा कीचड़ में आधे दिन की मेहनत कर चुके थे तथा एकत्रित चंद मछलियों को लेकर घर जा रहे थे। उनके घर की हालत जानने मै उनके साथ हो लिया।

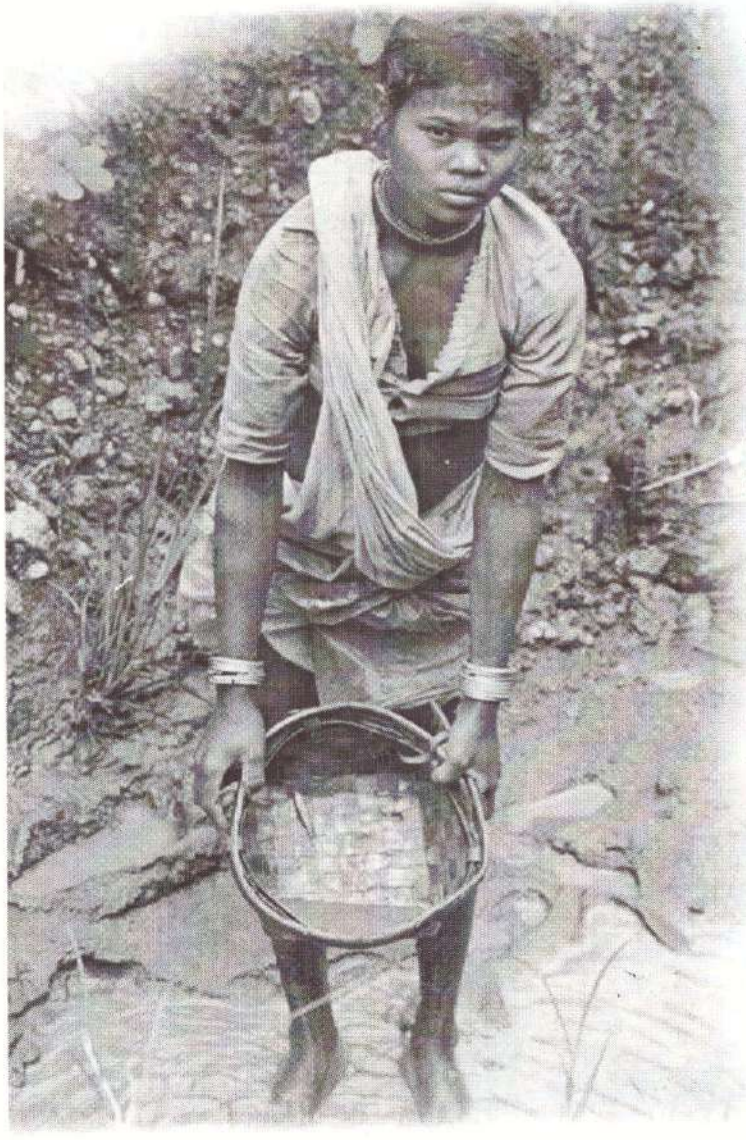

घर के अंदर लामू की स्त्री धान को मूसल से कूट रही थी- बस इतना ही घान लामू जुगाड़ पया था, इसका बना पेज 2-3 दिन चलेगा और इसके साथ मिलेगी चकोड़ा भाजी,मछली और कुछ कंद-मूल। पर ऐसा कितने दिन चलेगा ? मालवीय जी ने पूछा और संस्था की ओर से 10 कुड़े (50 किलो)चावल देने का प्रस्ताव भी रखा। कितना लौटाना होगा और कब तक?सवाल था लामू का। मालवीय जी ने अब उसे विस्तार से समझाया - देखो भई, हमारी संस्था जिसे अमरपुर में लोग नागपुर वाली संस्था के रूप में जानते हैं यह संस्था बैगाचक के 5 गांवो में राहत कार्य करेगी। इन गांवों में तुम्हारा गांव भी है अतः 16 बोरे अनाज हमने थाड़पथरा के जरूरत मंद लोगों हेतु रखा है। गांव के मुखिया सुग्रीव को भी बता दिया है। यह भी कहा है कि गांव का अपना अन्न कोष बना लो सब मिलकर और जो अनाज संस्था से लो उसे फसल आने पर सभी इस अन्न कोष में जमा करें। सभी मिलकर अपनी खेती की जमीन सुधारें। इसके लिये भी संस्था काम के बदले अनाज देगी तथा नकद पैसा भी मिलेगा जिसमें से आधा ग्राम कोष में जमा करना होगा। इस तरह पूरे गांव के लिये पर्याप्त अन्न और पैसा जमा हो सकेगा।

थाड़पथरा नाले में मछली पकड़ती लामू परिवार की बहू सन् 1996

रजनीकांत यादव

लेखक परिचय : गत 25 वर्षों से रचनात्मक छायांकन कर रहे रजनीकांत सामाजिक सरोकारों से लगातार जुड़े हुए हैं। मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुतरात तथा आंध्रप्रदेश के ग्रामीण तथा आदिवासी बहुल क्षेत्रों के प्रवासों में वहां चल रहे विकास कार्यों पर फोटो रिपोतार्ज तैयार किये हैं। लातूर, जबलपुर तथा गुजरात में आये भूकम्पों के विध्वंस तथा पुनर्निमाण पक्षों का व्यवस्थित फोटो डाक्यूमेंटेशन किया है।

नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ वीमेन चाइल्ड एंड यूथ डेव्हलपमेंट द्वारा मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के ग्रामीण आदिवासी अंचलों में चलाये जा रहे विकास कार्यों पर लेखन - छायांकन का कार्य गत एक दशक से कर रहे हैं, रजनीकांत ने मध्य भारत के इन क्षेत्रों को बारीकी से देखा-समझा है। नर्मदा नदी को उसके उद्गम से समुद्र मिलन तक देखा और इस पर नर्मदा - दी - इटर्नल प्रदर्शनी तैयार की है।

रजनीकांत की कला प्रदर्शनियों का आयोजन बिड़ला एकेडमी ऑफ आर्टस् कलकत्ता, बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी मुम्बई, नेशनल सेंटर फॉर परफारमिंग आर्टस् (NCPA), इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (IIC) नई दिल्ली समेत देश के अनेक प्रमुख नगरों में किया गया। ये सभी प्रदर्शनियां संबंधित संस्थाओं के द्वारा आमंत्रित तथा आयोजित की गई। छत्तीसगढ़ शासन के पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, म्यूजियम ऑफ मेनकाइंड (IGRMS) भोपाल, म.प्र. संस्कृत अकादमी, सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (C.S.E.) नई दिल्ली, टाटा इंस्ट्यिूट ऑफ सोश्यल साइंसेस (TISS), सहित अनेक प्रख्यात संस्थानों ने समय - समय पर रजनीकांत को लेक्चर डेमास्ट्रेशन हेतु आमंत्रित किया है।

जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, अमेरिका आदी देशों में रजनीकांत के चित्र व्यक्तियों व संस्थाओं द्वारा संग्रहित हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया, द हिन्दु, एशियन एज, मिड-डे, इण्डियन एक्सप्रेस, हिंदुस्तान टाइम्स आदी समाचार पत्रों तथा संडे, इंडिया टुडे, डाउन-टू-अर्थ, सेंचुरी एशिया, इकोलाजिस्ट, ह्यूमन स्केप, पहल, कादम्बिनी आदी पत्रिकाओं ने फोटो फीचर प्रकाशित किये हैं।

विकास कार्य के अंतर्गत लिये गये गांव
वर्ष 97-98

क्रम	गांव का नाम	जनसंख्या	कुल परिवार	साक्षरता %
	बैगाचक कार्य क्षेत्र			
01.	खम्हेरा	210	42	7 %
02.	सेराझर	435	78	7 %
03.	सिलपिड़ी	683	112	7 %
04.	तांतर	642	112	6 %
05.	थाड़पथरा	302	44	7 %
06.	कांदाटोला	220	44	7 %
07.	लदरादादर	150	27	7 %
08.	केंद्राबहरा	---	45	2 %
	अमरपुर कार्य क्षेत्र			
09.	सिधौली बैगनटोला	294	60	14 %
10.	पिपरिया	530	70	21 %
11.	साम्हर	76	17	--
12.	चंद्रागढ़	293	54	7 %
13.	संझारी	151	27	4 %
14.	हतकठा	1150	100	14 %
	कुल	5076	832	7.8 %

भूमि समतलीकरण

क्रम	गांव का नाम	मिट्टी बांध (एकड़ में)						एकड़
		1998		1999		2000		
		परिवार	एकड़	परिवार	एकड़	परिवार	एकड़	
01	तांतर	52	8.00	57	2.72	40	16.57	27.29
02	सेराझर	30	2.50	73	4.56	40	21.96	29.02
03	खम्हेरा	--	---	15	2.58	24	1.65	4.23
04	थाड़पथरा	38	2.50	37	4.89	06	1.93	9.32
05	कांदाटोला	24	3.00	27	2.26	07	1.07	6.33
06	लदरादादर	26	18.00	26	3.07	04	0.24	21.31
07	केंद्राबहरा	08	1.29	39	3.50	44	17.16	21.95
08	सिलपिड़ी	--	---	37	2.40	15	3.32	5.72
09	साम्हर	16	01.0	42	1.43	15	6.22	8.65
10	चंद्रागढ़	39	15.0	47	3.39	34	8.33	27.26
11	पिपरिया	41	10.6	17	1.81	23	5.69	18.10
12	सिधौली	53	12.0	48	2.30	24	9.59	23.89
13	संजारी	24	09.0	28	6.50	13	4.23	19.73
14	हथकटा	62	13.0	78	15.80	27	7.75	36.55
	कुल	413	95.89	571	57.75	316	105.71	259.35

व्यय की गई कुल राशि 12,07,774.00

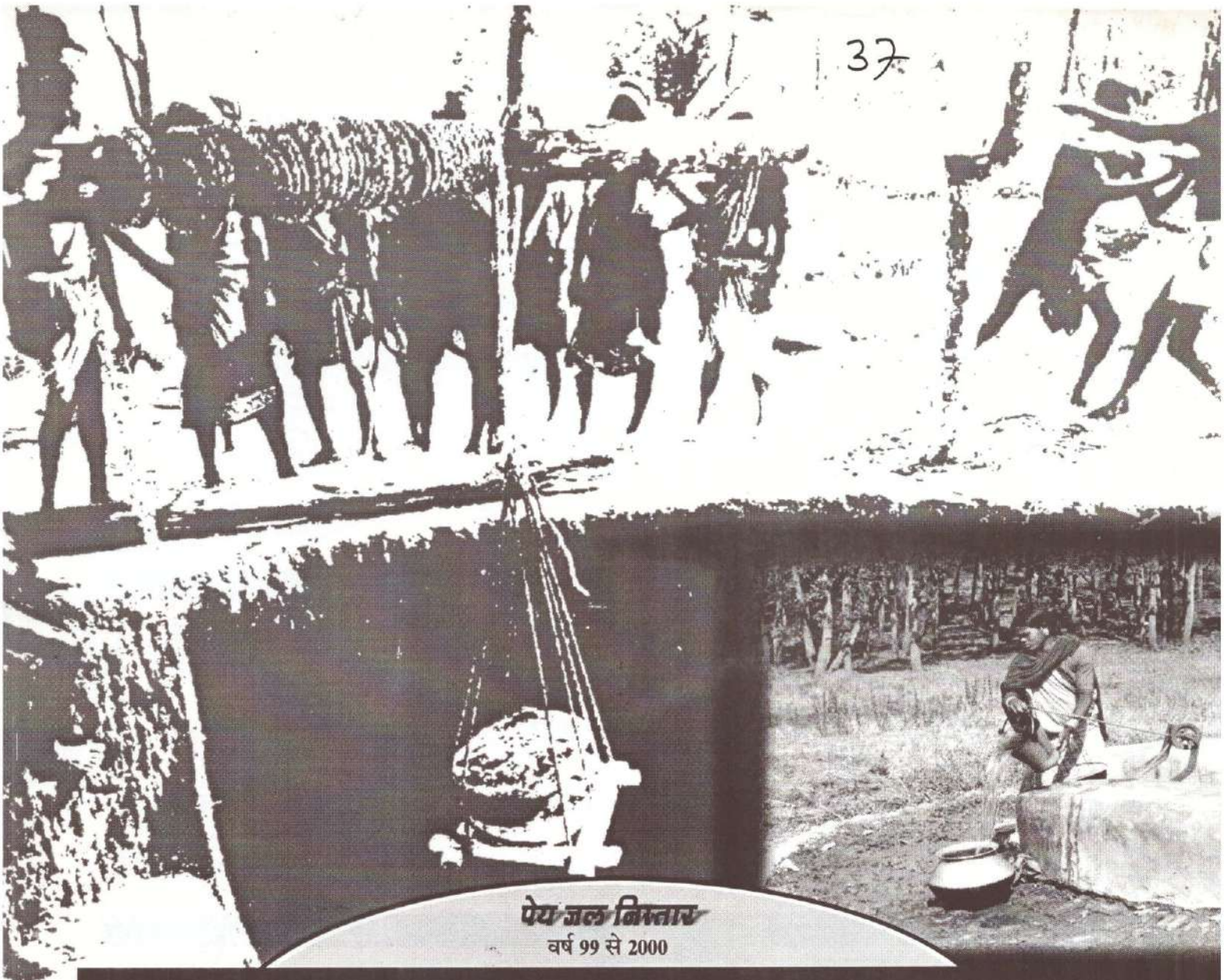

पेय जल निस्तार

वर्ष 99 से 2000

क्र.	कार्य का नाम	लाभान्वित परिवार	मानव दिवस	खर्च रू.	लोगों की भागीदारी
01.	झिरिया	24	134	5830.00	निर्माण,सफाई
02.	कूंआ,झिरिया	15	107	4000.00	निर्माण,सफाई
03.	झिरिया	14	188	4715.00	निर्माण,सफाई
04.	कूंआ	24	---	33575.00	निर्माण,सफाई
05.	झिरिया	20	170	8490.00	निर्माण,सफाई
	कुल	97	599	56610.00	

ग्राम कोष का प्रयोग

प्रस्थापित कोष			विनियोग								(आंकड़े रुपयों में)
क्रमांक	गांव का नाम	ग्रामकोष	बीज	खाघान	आजीविका	आई जी पी	उचित मूल्य की दुकान	कंपोस्ट	सामुदायिक भवन	अन्य	कुल
1	तांतर	112686	4800	9537	15156	16911	0	0	0	7079	53483
2	सिलपिड़ी	26932	0	0	0	0	0	0	0	0	0
3	थाइपथरा	23966	-	-	3000	-	-	-	3000	200	6200
4	कांढाटोला	17309	0	0	0	0	0	0	0	0	0
5	लढराढादर	27657	7350	8200	3000	0	0	0	4000	1100	23650
6	केंद्राबहरा	54857	5500	0	7000	0	0	0	0	0	12500
7	सेराझर	72200	11300	5520	5700	0	0	0	0	2965	25485
8	खम्हेरा	28331	7367	3000	4500	0	0	0	0	682	15549
9	सिधौली	71060	6588	0	11600	0	0	0	0	2974	21162
10	सामर	44999	2760	0	2650	0	0	0	0	231	5641
11	चंद्रागढ़	59652	90	0	6300	0	0	0	3500	3642	13532
12	पिपरिया	54931	10000	0	3000	0	0	0	0	0	13000
13	संझारी	46884	0	7500	27000	0	0	0	0	0	34500
14	हतकठा	114179	16593	25630	15300	10000	3000	3120	0	1325	74968
	कु ल	755643	72348	59387	104206	26911	3000	3120	10500	20198	299670

लामू परिवार की बैगा स्त्री के दो चेहरे,
सन् 1996 में जब संस्था ने बैगाचक में काम करना शुरु किया, यह स्त्री थाइपथरा नाले में अपने पति के साथ छोटी-छोटी मछलियां पकड़ रही थी, 2 घंटे की हाड़-तोड़ मेहनत से कुल 8-10 छोटी मछलियां हाथ लगीं। मुख पृष्ठ पर इसी स्त्री का सन् 2000 में लिया गया पोट्रेट जो संस्था के कार्यों से थाइपथरा के लामू बैगा परिवार की स्थिति में सुधार दर्शाता है। दाने-दाने को मोहताज परिवार के पास अब खुद के खेत में उगाया गया अन्न वर्ष भर के लिये जमा हो जाता है।

जीवन संघर्ष

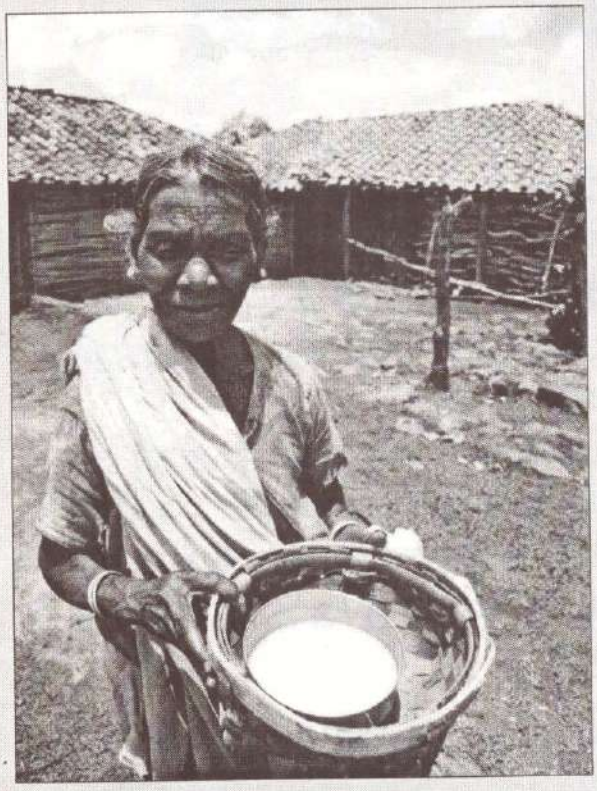

आदिवासी जगत का सत्य

बैगाचक का भौगोलिक परिवेश - नर्मदा नदी के उद्गम से नीचे लगभग 9000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले -पसरे मैकल पर्वत के वनाच्छादित जलग्रहण क्षेत्र में आता है बैगाचक। खरमेर, बुड़नेर, तांतर, सिवनी जैसी अनेक बारामासी नदियों के स्त्रोत मैकल पर्वत की इन घाटियों में है। अमरकंटक से स्वत: प्रवाहित नर्मदा नदी को इन दक्षिण तटीय स्त्रोतों से भरपूर जल मिलता है। इन्ही जल स्त्रोतों के किनारे बसे 6 गांवों- तांतर, थाड़पथरा, सिलपिड़ी, कांदाटोला, सेराझर और केंद्राबहरा में संस्था ने सन् 1995 में सर्वेक्षण किया। इस आरक्षित वन क्षेत्र में वन विभाग के सहयोग बिना सर्वेक्षण कार्य संभव नहीं था अत: यहां आये संस्था के कार्यकर्ताओं को शुरुआती दौर में दिक्कतों का सामना करना पड़ा, ग्रामवासियों और वन विभाग दोनों के लिये कार्यकर्ता अजनबी थे। लगातार प्रयास करते रहने से स्थिति बदली, धीरे-धीरे वन-विभाग और ग्रामवासियों में अपनी सही पहचान बनाने में संस्था को सफलता मिली। पदार्पण के 6 वर्षों बाद अब वन विभाग और संस्था मिलकर कार्य करने की योजना बना रहे हैं।

प्रथम प्रयास के रूप में एक मीटिंग संस्था प्रमुख श्री राजेश मालवीय और सी.एफ. श्री सूद की जबलपुर में हो चुकी है, जिसमें सभी प्रमुख वन अधिकारी उपस्थित रहे। कंजरवेटर फारेस्ट श्री सूद के साथ हुई इस बैठक में भविष्य की कार्ययोजना की रूप रेखा बन गई है जिसके अंतर्गत सर्वेक्षण तथा एक कार्यशाला निकट भविष्य में चाड़ा में आयोजित की जानी है।

बैगाओं की जो हालत थी वह संक्षेप में इस प्रकार बयान की जा सकती है -- वनोपज तथा मोटे अनाज से वर्ष के 3 से 5 महीनों तक ही जीवन निर्वाह संभव था। जल स्त्रोतों के आस-पास साल वनों की कटाई से जल प्रदूषण लगातार बढ़ रहा था। सन् 1995-96 में तो सेरिब्रम मलेरिया से 3 माह में 11 बच्चों की मौत कांदाटोला तथा आस-पास के गावों में ही हो गई थी । बड़ों में भी मलेरिया एपिडमिक तथा प्रदूषित जल से पेट की गंभीर बीमारियां फैल रही थीं । असंख्य मरीज बगैर पर्याप्त इलाज के भगवान भरोसे थे। सरकार के स्वास्थ्य विभाग को नींद से जगाने में संस्था ने दिन-रात एक कर दिये। इससे अनेक बच्चों और बड़ों को मरने से बचाया जा सका। पर कई ऐसे बच्चे जो समय पर इलाज मिलने से बच सकते थे, नहीं बचाये जा सके, इस बात पर विभाग को तीखी आलोचना का सामना करना पड़ा।

चित्र परिचय:

1. पेट की बीमारियों का कारण झिरियाका प्रदूषित पानी।
2. वनोपज तथा मोटा अनाज वर्ष भर उपयोग हेतु अपर्याप्त ।
3. सेरिब्रम मलेरिया से ग्रस्त यह बालक बचाया नहीं जा सका ।

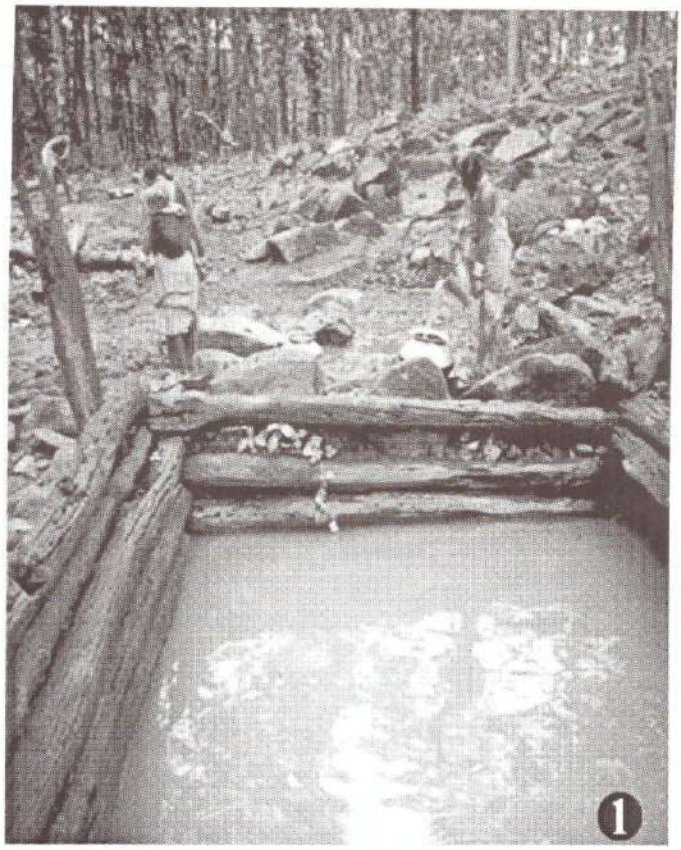

अंततः भोपाल की पहल पर विशेषज्ञों का एक दल पूरे बैगाचक में रोग निदान तथा उपचार हेतु भेजा गया । इससे आने वाले वर्षों में स्वास्थ्य विभाग के फालोअप तथा महामारी रोकने के प्रयासों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है । यह संस्था कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों का ही फल है।

सन् 1998-99 तक लोगों में संस्था के कामों को लेकर आशा और खुद में विश्वास की भावना स्पष्ट दिखने लगी। स्वभाव से भीरु तथा मितभाषी बैगा समाज एक सकारात्मक परिवर्तन हेतु गतिमान हो गया। थाड़पथरा, सेराझर तथा तांतर जैसे गांवों में लोगों ने अपना अन्नकोष, नकदकोष तथा बीजकोष बना लिया जिसका संचालन तथा उपयोग वे खुद ही करते हैं। इस कोष को सुरक्षित रखना तथा बढ़ाना यह भी संभव हुआ है, जिससे साहूकार द्वारा शोषण खत्म हो गया है। साहूकार वर्ग ही संस्था के आने से पहले बैगाओं की तात्कालीन जरूरतों को पूरा करता था और इस प्रक्रिया में बैगाओं का भरपूर शोषण भी करता आया है। जरूरत पर दिये अनाज के बदले दुगना अनाज लेना आम बात थी। बैगा स्वीकारतें हैं कि अनेक बार राई-रमतिला जैसी महंगी फसलें थोड़े से पिछले उधार को चुकाने हेतु साहूकार को देनी पड़ती थी। संस्था का सहयोग मिलने और अनेक सामुदायिक कार्यों से शोषण रुक गया है यह भी बैगा मानते हैं।

चित्र परिचय :

1. मेड़बंदी से सुधरे खेत में धान रोपती बैगा स्त्री
2. धान की स्वस्थ बालियां

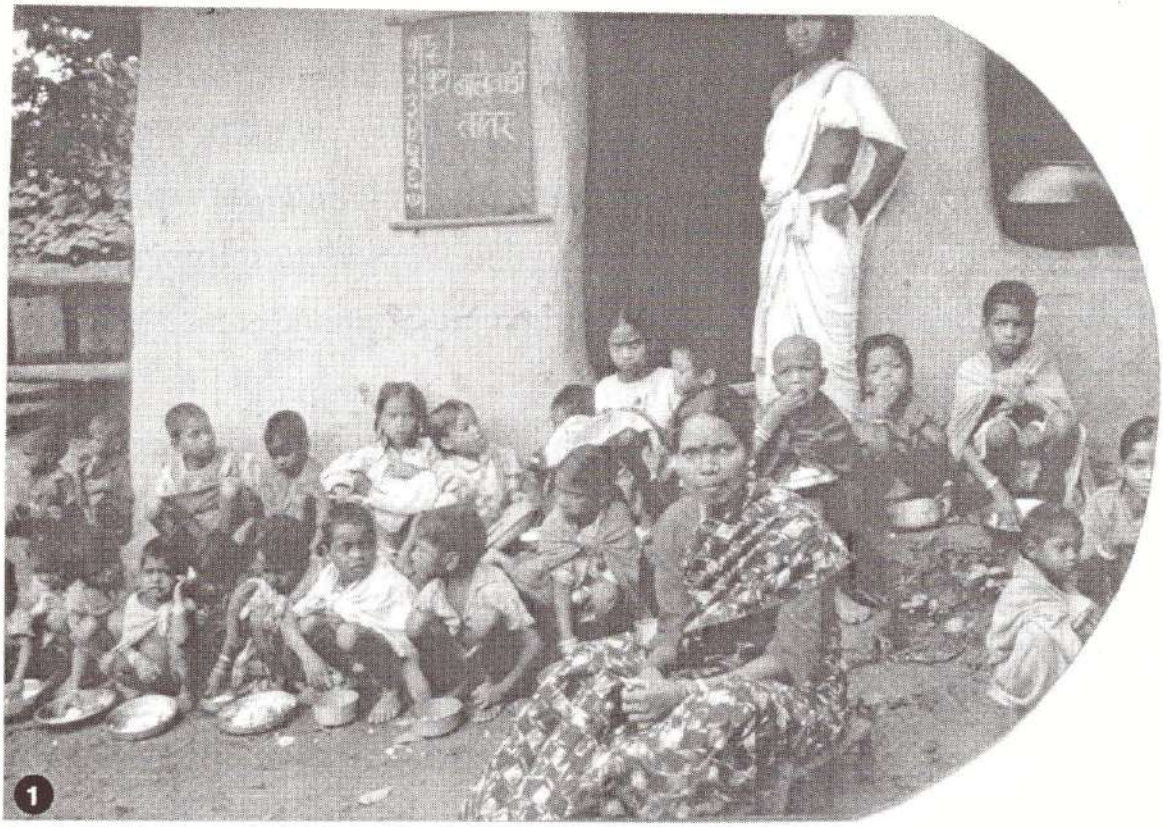

पहली जरूरत थी उदर पोषण में सहायक बनकर पलायन रोकना। सन् 1995 में शुरू कार्यक्रम के दो ही वर्षों बाद यानी सन् 1997 तक पलायन रुक गया था। स्वास्थ्य विभाग गावों में चेकअप करने लगा था पर दवाईयों के अभाव की शिकायत विभाग के ग्रामीण कार्यकर्ता करते थे-चेकअप तो वे करते थे पर बीमारों को देने हेतु किट में पर्याप्त और उचित दवाईयों का अभाव था। लोगों का विश्वास तथा सहयोग मिलने से संस्था ने जल - स्त्रोतों की सफाई और देशज उपचार विधि आयुर्वेद से रोगोपचार शुरू किया। पीने के स्वच्छ पानी की उपलब्धता तथा उपयोग के कार्य लोगों के साथ किये। बच्चों के लिये थाड़पथरा तथा तांतर में बालवाड़ियां शुरू कीं जो संसाधनों की कमी के बावजूद सन् 2003 में भी व्यवस्थित चल रही हैं। यहां आने वाले बच्चों को दोपहर पोषाहार भी दिया जाता है। पर्याप्त राशि उपल्बध न होने के कारण चाहकर भी अन्य गांवों में बालवाड़ियां शुरू नहीं हो पा रही हैं परंतु कुपोषण और स्वास्थ्य पर जाग्रति का काम कार्यकर्ता मासिक बैठकों में करते हैं।

1. बालवाड़ी ग्राम तांतर
2. थाड़पथरा गांव में चेकअप तथा दवा वितरण
3. कुपोषित बैगा बच्चे थाड़पथरा गांव

बंजर पड़ती और पथरीली भूमि को खेती योग्य बनाने के प्रयास- कार्यक्रम के शुरूआती दौर में भूमि तथा जल संरक्षण संर्वधन के प्रयास पलायन रोकने हेतु किये गये। बैगा आदिवासियों की अनुपजाऊ जमीनों में गाटर बंदी की गई। जल स्त्रोतों को कच्चे बांध से रोक कर जल की उपलब्धता बढ़ाई गई। इस शुरूआती दौर में यह स्पष्ट हो गया था कि कृषि सुधार करके फसल बढ़ानी होगी। भोजन की समस्या हल करने और साहूकार के चंगुल से मुक्ति हेतु और कोई कारगर तरीका नहीं है। इन वन ग्रामों में कटते जंगलों और घटती वनोपज के कारण भी यह करना जरूरी हो गया, नहीं तो पलायन होगा - कस्बों- शहरों की ओर। सन् 1995-96 में अमरपुर के बैगा टोला में पहाड़ी ढलानों पर व्यापक मेड़बंदी कार्य किया गया था। सन् 1997 में पहाड़ी की निचली ढलानों पर गेहूं की फसल (धान कटने के बाद) लेना संभव हो गया था। गाटर बंडिंग के पास 1 फुट मिट्टी और पर्याप्त नमी रुक रही थी।

अमरपुर के उदाहरण को लेकर बैगाचक में सन्1997 में पहाड़ी ढलानों पर (जहां बैगा मोटा अनाज ही उगा पाते थे) गाटर बंडिंग कार्य किया गया।पठारी विस्तारों को ऊँची मेड़बंदी द्वारा धान की फसल के उपयुक्त बनाया गया,जैविक तथा गोबर खाद का चलन भी बढ़ाया गया।

1. पथरीली ढलान ,सिर्फ मोटे अनाज की खेती संभव
2. पहाड़ी ढलान पर गार्टर बंडिंग से पर्याप्त मिट्टी और नमी का ठहराव

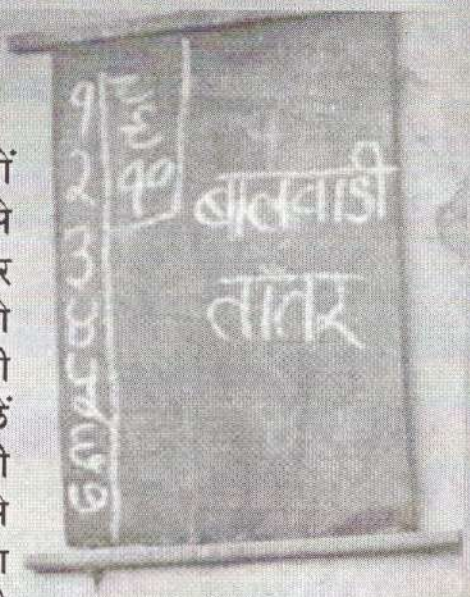

बालवाड़ी प्रयोग- थाड़पथरा तथा तांतर वन ग्रामों में चलाई जा रही बालवाड़ियों में गत 4 वर्षों से आदिवासी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा और दोपहर भोजन दिया जा रहा है। यहां आने वाले बच्चों को तथा उनकी माताओं को भी स्वचछता की शिक्षा दी जाती है, कुपोषण रोकने बच्चों को दोपहर में दालें तथा गुड़ दिया जाता है। यहां बच्चों को बारहखड़ी का ज्ञान,अंक ज्ञान तथा कविताओं के माध्यम से संसार का बोध ज्ञान कराया जाता है। थाड़पथरा बालवाड़ी शिक्षिका श्रीमती शशि मार्को एक छोटी सी उचित मूल्य की दुकान भी चलाती हैं जहां साबुन,नमक,मसाले,माचिस आदि थाड़पथरा निवासियों हेतु उपलब्ध है। इन वस्तुओं हेतु पहले लोगों को 8 किलोमीटर चलना होता था चाड़ा बाजार तक।

साल बोरर कीट का प्रकोप और संस्था की भूमिका - सन् 1996-97 में बैगाचक वन क्षेत्र में साल बोरर कीट की महामारी फैली। इस छिदहा कीड़े के प्रकोप से हजारों हरे-भरे साल वृक्ष सूखकर गिरने लगे। बोरर कीट प्रभावित अन्य हजारों वृक्षों को काटा गया ।कीट प्रकोप की जानकारी मीडिया को देने,विशेषज्ञों तक पहुंचाने और इसके फैलाव पर नजर रखने की सकारात्मक भूमिका संस्था के कार्यकर्ताओं ने निभाई, वन विभाग से संपर्क बनाये रखा। नष्ट हो चुके साल वन के पुनरुद्धार हेतु भी संस्था वन विभाग के साथ मिलकर कार्य करने को उत्सुक है। डिण्डौरी वन क्षेत्र के सी.एफ. श्री सूद मानते हैं कि आदिवासियों-वनवासियों से सीधे संवाद की स्थिति में वन विभाग नहीं है तथा संस्था की मध्यस्थता जरूरी है। वन सुरक्षा का एक आदिवासी सहभागी माडॅल आने वाले वर्षों में विकसित हो सकेगा जिसमें आदिवासियों का पारंपरिक ज्ञान तथा वन विभाग का पुस्तकीय ज्ञान दोनों के तालमेल से काम हो ऐसी अपेक्षा संस्था एक मध्यस्थ के रूप में करती है। वन तथा आदिवासी दोनों के सह-अस्तित्व का एक व्यापक कार्यक्रम वन विभाग तथा संस्था के सौजन्य से बने ऐसा विचार संस्था प्रमुख श्री राजेश मालवीय का है। 5 गांवों में वन विभाग के साथ एक संयुक्त पायलट प्रोजेक्ट चलाया जाये श्री मालवीय चाहते हैं । इस पर 23-24 मार्च 2002 की चाड़ा मीटिंग में चर्चा हुई।

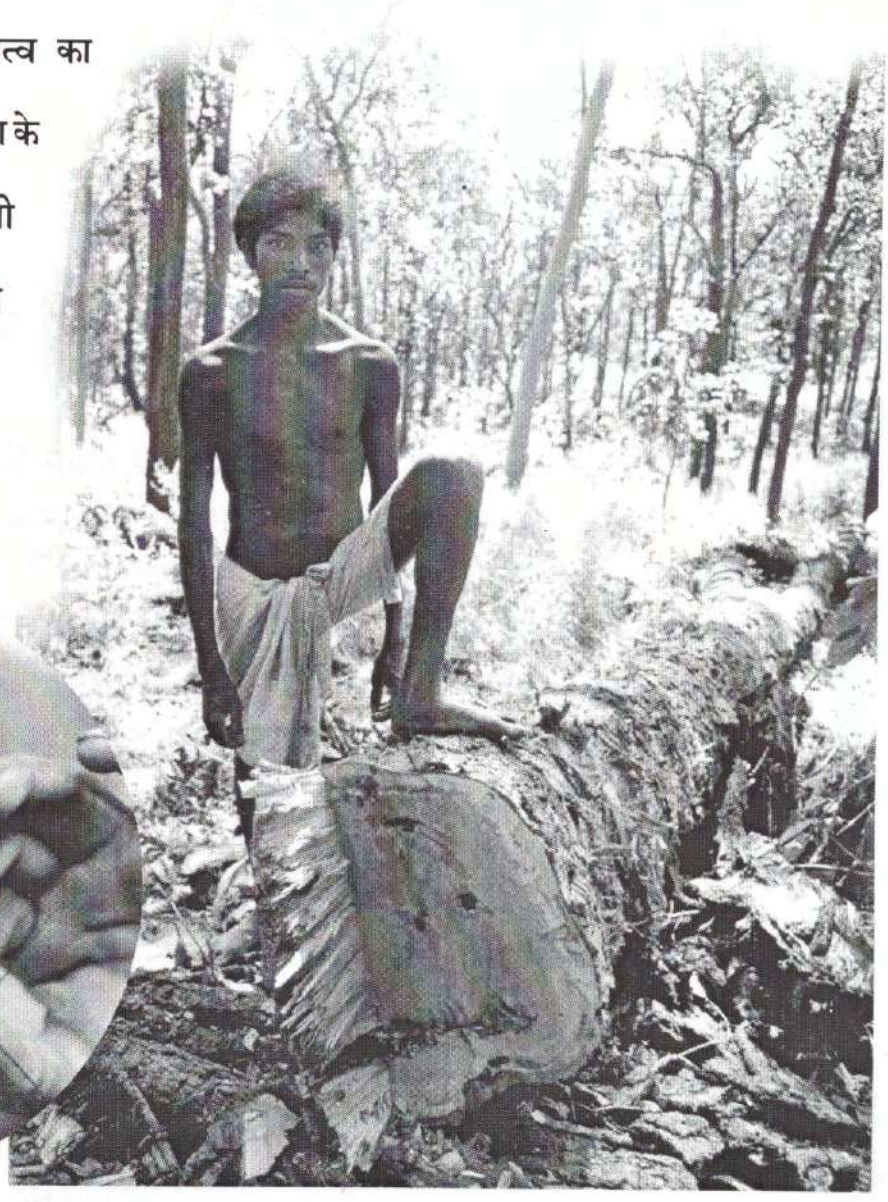

चित्र : मुकादम सुग्रिव बैगा से बातचीत करते प्रो. बिश्वास

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट के सोस्योलॉजी विभागाध्यक्ष प्रो.बिश्वास बैगाओं के बीच 22,23,24 मार्च सन् 2002 का NIWCYD तथा वन विभाग के आमंत्रण पर I.I.F.M. से प्रोफेसर बिश्वास चाड़ा पधारे तथा आसपास के प्रोजेक्ट गांवों में भी गये। संस्था के कार्यकर्ताओं तथा बैगा आदिवासियों से सीधे बातचीत में कई उपयोगी सुझाव उन्होंने दिये। प्रो. बिश्वास का मानना है कि वन विभाग और NIWCYD मिलकर काम करें तो अनेक उपयोगी योजनायें तथा वन प्रबंधन कार्यक्रम बैगाचक में चलाये जा सकते है। डिंडौरी में वन विभाग द्वारा आयोजित लोक वानिकी की प्रशिक्षण कार्यशाला में तात्कालिक D.F.O. श्री धीमन के आमंत्रण पर प्रो. विश्वास ने उपस्थितों को संबोधित किया। कार्यक्रम में जिले की प्रभारी मंत्री मा. गंगा बाई उरेती, तत्कालीन जिला कलेक्टर, एस.पी.सहित जिले के गणमान्य नागरिक, वैज्ञानिक तथा बैगा आदिवासी भी शामिल हुए।

लोक वानिकी कार्यशाला को संबोधित करते प्रो. बिश्वास

साल भर *आदिवासी* अंचलों के लोग क्या करते हैं ? कैसे गुजरते हैं उनके दिन महीने साल-दर-साल बदलते मौसम से कैसे जूझते हैं, ये कैसे गुनते और बुनते हैं जीवन का *ताना-बाना* गृहस्थी कैसे निभती है-घर की औरत क्या करती है और मरद की आस-पड़ोस से कैसे निभती है, कौन देता है और कौन लेता है, कितना आता है और कितना चला जाता है? साल भर के जीवन का लेखा-जोखा है तुलाराम झारिया का किस्सा-चैत से फॉगुन तक, तुलाराम झारिया का *एक साल.....*

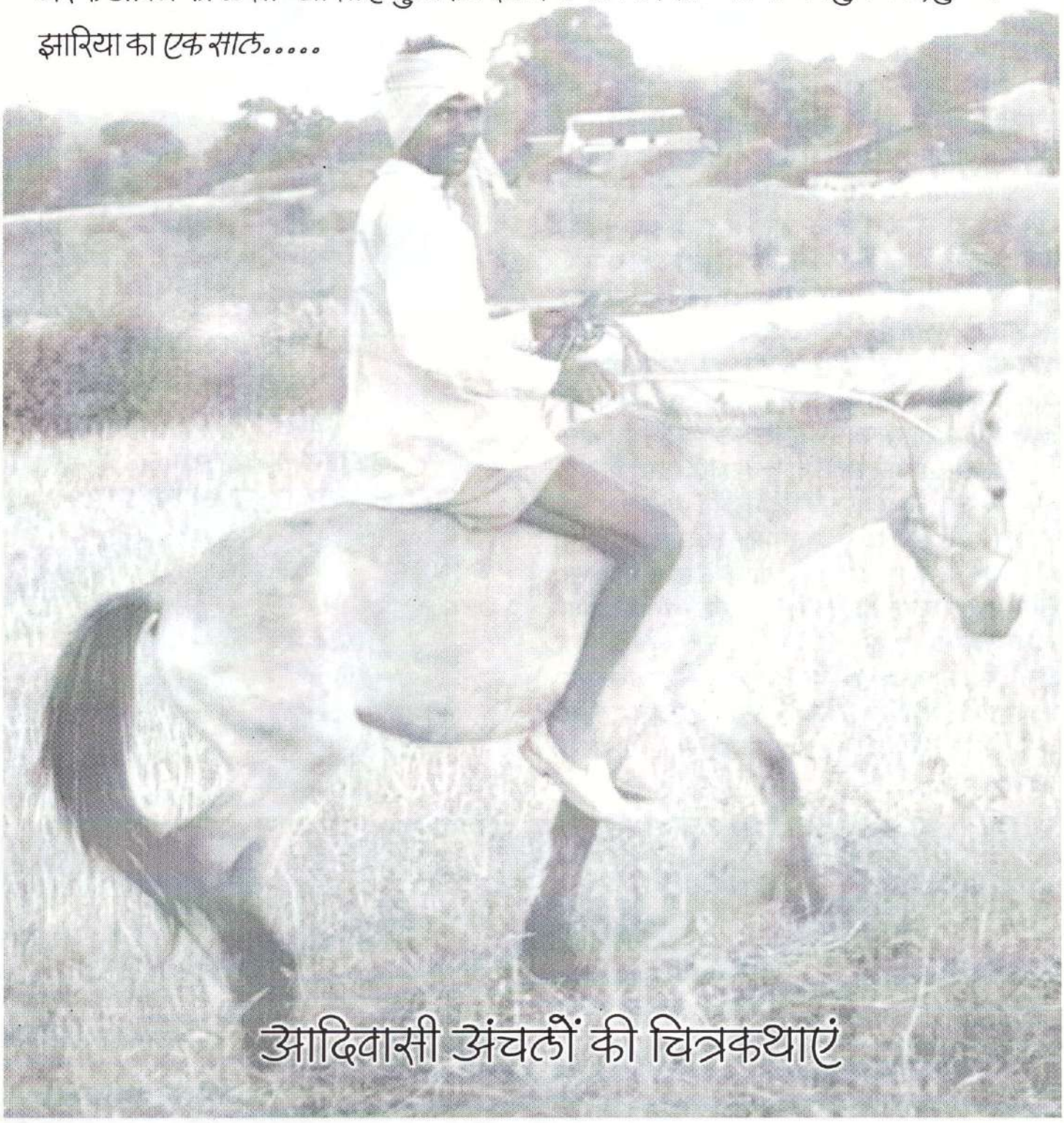

आदिवासी अंचलों की चित्रकथाएं

इस तरह अवर्षा,अतिवर्षा,ओले पाले से फसल बची रहे तो साल भर खाने के लिये धान (1 क्विंटल बीज बचाकर) 6क्विंटल, तथा 5 क्विंटल गेहूं(1क्विंटल बीज बचाकर),50-60 किलो मक्का,इतनी ही ज्वार तथा 60 किलो के लगभग कोदो-कुटकी हो जाती है। रोज पूरे परिवार को गेहूं- चावल मिलाकर 2 किलो अनाज लगता है,यानी 365 दिनों में 730 किलो। मेहमान,नाते रिश्तेदारों का साल का 120 किलो और जोड़ लो तो 850 किलो घर में खर्च हो जाता है। साल भर में 1100 किलो ग्राम पैदावार गेहूं- चावल मिलाकर उपज है यानी 350 किलोग्राम मोटे तौर पर 3 बोरे गेहूं और धान मिलाकर बचते हैं एक साल में। तेल, गुड़, नोन, साबुन, कपड़े, बीमारी, घर के रख रखाव, बच्चों की परवरिश,शिक्षा पर होने वाले अतिरिक्त खर्चे में बीज और बचा हुआ 3 बोरे अनाज बिक जाता है, अक्सर कर्ज भी चढ़ जाता है, तब बड़े किसान से खाने को एक के डेढ़ कुड़े तथा बीज का एक के दो कुड़े के हिसाब से अनाज उधार लेना पड़ता है। ये पूरे ऊपरी खर्च अतिरिक्त मजदूरी करके पति- पत्नी पूरे करते हैं।

सरकारी सहायता कोई भी नहीं, कुल एक बार 20 किलो चना बीज मिले थे जिसका 5 किलो काट लिया गया(कमीशन)पर फिर आज तक कोई सहयोग नहीं मिला । पूरी तरह स्थानीय संसाधनों और बड़ों (बड़ी जोत के किसान, साहूकार) पर निर्भर है आजीविका,पर फिर भी इतना सुख तो है ही कि खुद की 4 एकड़ जमीन है और आदमी - औरत मिलकर गृहस्थी चला रहे हैं।

चाहते हैं कि बीज सरकार दे, कुछ और सहयोग की अपेक्षा भी रखते हैं पर यह भी जानते हैं कि ऊपर से कुछ मिलने वाला नहीं, खुद ही करना-मरना है। जो भाई-बंद आस-पड़ोस के हैं वे ही मदद को आते हैं,बाहर से,सरकार से कोई मदद नहीं मिलती। कभी मिनिस्टर आते हैं डिंडौरी में तब सभा में बुलावा आता है, आगे बिठाया जाता है,

खुद मंत्री हमारी बात सुनते हैं ,दरखास्त लेते हैं तथा 10-20 लोगों की सुनवाई हो जाती है। 2-4 का काम भी हो जाता है पर बाकी पूरा गांव लाभ नहीं ले पाता,फसल में लगे होने पर सभा में कई नहीं जा पाते, न दरखास्त तैयार करना जानते हैं सभी। आकर तो कोई पूछता नहीं है,तो क्या करें ? दिन कट रहे हैं। ऊपर वाले ने ठीक दिया तो खेती हुई वरना उधार बेचकर,उधार कर पेट पुरा लेते हैं। यह था तुलाराम झारिया का एक साल का लेखा-जोखा। मुख्य धारा से अलग-थलग पिपरिया गांव के हर सीमांत कृषक का साल भर का गुजारा तुलाराम से भी बदतर हालत में हो पाता है। पत्नी भी मेहनती समझदार है तो कभी खच्चर की सैर भी,डिंडौरी तक की तुलाराम कर लेता है और बाहर आ रहे परिवर्तनों का जायजा नोन,गुड़,तेल के साथ ले आता है।

आलेख एवं चित्र : रजनीकांत यादव

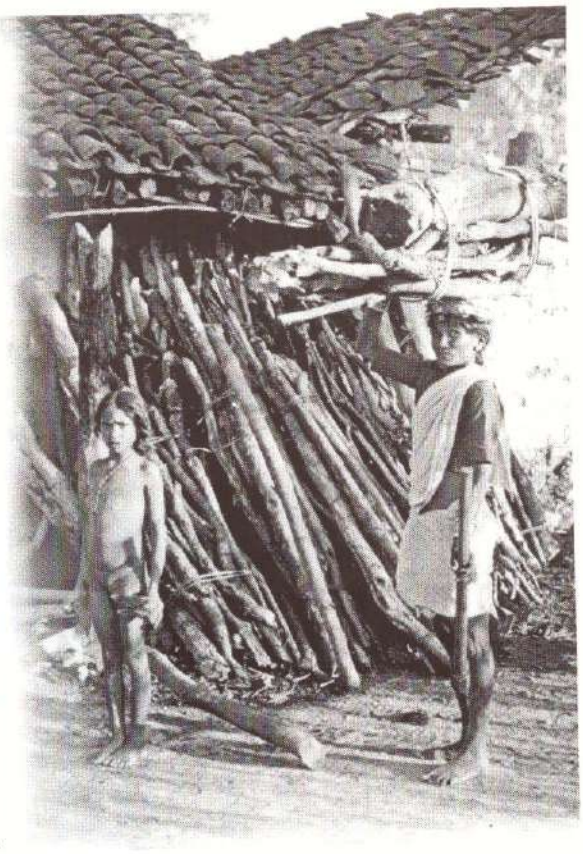

हैं पर बैगा मूलतः किसान नहीं हैं और अपनी जरूरत से ज्यादा अनाज उगाना ये पसंद भी नहीं करते, मुख्य धारा में मिलना तो दूर की बात है दूसरी जगहों के बैगा की तरह ही अमरपुर के बैगा भी अपनी निकटवर्ती परंपरागत भारतीय ग्रामीण व्यवस्था से भी कटे हुए रहते हैं।

मोहेगांव के टीकाराम नागेश शिक्षण प्रशिक्षण का काम करने वाली संस्था से जुड़े हैं। उनसे मिली जानकारी के अनुसार अमरपुर ब्लाक के जंगल अब रिजर्व फारेस्ट हैंऔर पिछले 30-40 वर्षों में इस क्षेत्र में आये परिवर्तनों के दौर में बहुत से जंगलात साफ भी हो गये हैं। बैगाओं की जंगलों पर रही आई निर्भरता अब उनके लिये अभिशाप बनती जा रही है। रिजर्व फारेस्ट में जंगल काटना अथवा मन मर्जी से क्लासीफाईड वनोपज इकट्ठा करना अब दंडनीय अपराध है। उन्ही ने बताया कि अभ्यारण्यों के कारण भी बहुत बड़ा जंगल का इलाका मंडला जिले के बैगाओं से छिन गया है। पिछले वर्षों में इमारती लकड़ी की बढ़ी हुई मांग से भी बहुत जंगल साफ हुए। मोहेगांव के बिल्कुल पास भी अच्छा खासा जंगल था पर आज सिर्फ निस्तारी झाड़ियों का इलाका ही आस पड़ोस में बचा है।बैगानटोला और मोहेगांव पिपरिया के बीच 3 की.मी. का घना जंगल भी पूरा का पूरा साफ हो गया, टोले के पीछे की पहाड़ियों में ही अब कुछ घना जंगल बच पाया है।

25-30 साल पहले तक बैगनटोला में आज जैसी स्थिति नहीं थी पर अब बैगनटोला गरीबी भुखमरी के कगार पर खड़ा है। जंगल में अब सिर्फ जलाऊ लकड़ी, माहुलपत्ता और तेंदूपत्ता, थोड़ा आंवला और थोड़ा महुआ मिल पाता है। मैदानी खेती की जमीन बैगाओं के पास पहले से नहीं थी और न ही कभी उनने मैदान में खेती करने की कोशिश की। पहाड़ी ढलानों पर और उंचे नीचे टीलों पर सिर्फ मोटा अनाज होता था थोड़ा सा। मोहन बैगा के परिवार की तरह बाकी के परिवारों की बदहाली भी दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी। फटे हाल अधनंगे बच्चे जो पेज पी-पीकर जी रहे थे। जब बच्चों की जिंदगी पर भी बन आई तो मजबूर बैगाओं ने जंगल से जलाऊ लकड़ी इकट्ठा कर आस- पास के कृषि प्रधान संपन्न गांवों में सिरबोझ ले जाकर बेचना शुरू किया। बैगा जो मोहेगांव सिर्फ अनाज की या बीज की जरूरत के लिये ही आते थे अब अक्सर लकड़ी बेचने आने लगे। मोहेगांव में ही सामाजिक संस्था की इकाई के कार्यकर्त्ताओं से बातचीत में बैगानटोला पर आई मुसीबत का पता कार्यकर्त्ताओं को चला। बैगाओं ने बताया कि खाने को गांव में कुछ भी नहीं इस साल और लोग मुसीबत में हैं।

कार्यकर्त्ताओं ने गांव का सर्वे किया तो पाया कि पूरे गांव के सभी परिवारों ने कृषकों से खाने हेतु धान उधार लिया है और अधिकांश परिवार साहूकारों के चंगुल में हैं जो 1 कुड़े के बदले 2 कुड़े का पैसा लेकर अनाज दे रहे हैं। साहूकारों और किसानों से अनाज न लें तो कलपते बच्चों को क्या खिलायें और खुद कैसे जियें ? इस दारुण स्थिति से निपटने के लिये सामाजिक संस्था ने बैगाओं की एक ग्राम समिति बनाई जिसके माध्यम से तुरंत 25 क्विंटल अनाज 22 परिवारों में वितरित किया गया। अगली फसल के लिये मोहन बैगा ने चाहा कि संस्था खेती के काम से भी टोले के लोगों कि मदद करे। क्योंकि उनके पास खेती योग्य काली मिट्टी वाली मैदानी जमीन थी ही नहीं। पहाड़ी ढलानों और नीचे के टीले टेकड़ियों पर जो बंजर पथरीली जमीन थी उसमें न तो बरसात का पानी रुकता था, और नही उपजाऊ मिट्टी। बल्कि हर बरसात में साफ किये गये ढलानों की मिट्टी निचले मैदानी इलाकों के खेतों में चली जाती थी या नदी- नालों में बह जाती थी।

प्र. समाज में लड़की के संबंधों का फैसला कैसे होता है ?

उ. देखकर फैसला करते हैं यदि लड़की, लड़के को छोड़कर चली जाये तो समझाने की कोशिश करते हैं। वह मान जाये पर लड़के वाले यदि लड़की को पुनः स्वीकार नहीं करते तो समाज उन पर 500 रूपये नकद और 2 क्विंटल धान का जुर्माना करता है, लड़की छोड़ने पर समाज को भोजन कराना पड़ता है, समाज इस तरह छोड़ी गई लड़की के लिये दूसरा रिश्ता ढूंढता है। यदि लड़का लड़की को भगा दे, लड़की मां- बाप के यहां चली जायेगी तो उसे 1 साल का खर्च देना होगा। इस बीच किसी अन्य जगह लड़की का संबंध करके उसे चूड़ी पहना दी जाती है। समाज को छूतक खिलाना पड़ता है।

प्र. बीमारी का इलाज कैसे करते हैं ?

उ. पहले जड़ी- बूटी से करते थे अब नहीं मिलती तो डिंडौरी ले जाकर डॉक्टर को दिखाते हैं।

प्र. तुम अपने परिवार का साल भर का गुजारा किस तरह करते हो ?

उ. य हां पहाड़ के नीचे 3 टुकड़ों में (डेढ़ एकड़) जमीन साफ कर ली है, इसमें कुल 5 क्विंटल अनाज साल भर में हो पाता है पर पति- पत्नी और बच्चों को साल भर में 15 क्विंटल अनाज लगता है। 1 क्विंटल के लगभग मक्का उगा लेते हैं बाड़ी में। सिर बोझ (जलाऊ लकड़ी) बेचकर बाकी पुरा लेते हैं। आपस में काम करके 5 किलो रोज के हिसाब से 2 महीने मजदूरी भी मिल जाती है।3 क्विंटल अनाज इस तरह जुड़ पाता है। कुछ लोगों के पास ज्यादा धान होता है उनसे उधार ले लेते हैं पर पांच किलो का साढ़े सात किलो लौटाना पड़ता है।

प्र. कौन- कौन सी फसल ले लेते हो ?

उ. बरसात की फसल धान, ठंड की फसल गेहूं, चना, मटर और अलसी। गर्मी में लकड़ी बेचते हैं। पर गांव के बाहर किसानों के यहां काम करने नहीं जाते।

प्र. तीज - त्योहार कौन - कौन से मनाते हो ?

उ. एक तो हुडेली (हरयाली) सावन में खाना- पीना करते हैं, किसी एक घर में पकाकर सब मिलकर खाते हैं। दिवाली मनाते हैं, नारियल-सुपारी देकर, बड़े देव को दिया जलाते हैं। एक दिया अनाज के नाम का, एक गौशाला में, एक दिया दूसरे के आंगन में भी रखते हैं। कुल 5-6 दिये आटे के बनाते हैं जिसमें राई का तेल और कपास की बाती होती है। आटे का दिया जब बुझ जाता है तो बच्चे उसको खा जाते हैं।

प्र. मौत होने पर क्या करते हो ?

उ. दाह- संस्कार करते हैं, खाना- पीना भी करना पड़ता है। पूरा समाज मिलकर खर्च करता है।

प्र. बच्चा होने पर क्या करते हो ?

उ. बच्चा होने पर स्त्री दो माह चौके से बाहर रहती है। खाना परिवार के दूसरे लोग बनाते हैं। दो महीने बाद चौक उठाते हैं। 50-60 लोगों का भोजन भी कराते हैं।

प्रतिकूल परिस्थितियों से घिरा होने के बाद भी बैगनटोला बैगाओं के स्वाभिमान का जीता जागता और रोता- हंसता उदाहरण है, जहांएक कौम ने तमाम मुश्किलों के बावजूद अस्मिता बनाये रखी है।

आलेख एवंचित्र : रजनीकांत यादव

08. गत डेढ़ दशक में सरकारी गैर सरकारी डोनर एजेंसियों के रुख में परिवर्तन आया है इसे आप कैसे आंकते हैं, क्या कठिनाइयां बढ़ी हैंऔर काम को सुचारू रूप से चलाना कठिन होता जा रहा है -

समय- समय पर सरकारी गैर सरकारी डोनर एजेंसियों के रुख में कुछ नीतिगत परिर्वतन से नियोजित कार्यक्रम में कुछ रुकावट आयी है। ऐसी स्थिति में संस्था को कुछ निधि व्यवस्था हेतु आर्थिक साधन के कार्यक्रम विकसित करने चाहिये ऐसी जरूरत महसूस हो रही है।

09. संस्था का बेन्च मार्क कार्य -

संस्था ने ग्राम सशक्तीकरण जिसमें संसाधनों के पुनर्निमाण विकास, उसके व्यवस्थापन, गांव को शोषण से रोकने हेतु ग्राम कोश का निर्माण व विकास कार्य में जन भागीदारी व स्थानीय संसाधनोंके प्रति लोगों का लगाव इत्यादि बैगाचक - अमरपुर, जिला डिंडौरी के 14 गांवों में तथा कोंडागांव बस्तर क्षेत्र जहां संस्था ने सघन कार्य किया है एक आदिवासी ग्राम के विकास की प्रक्रिया कैसी हो कार्यक्रम कैसे हों, इन्हे एक माडल के रूप में देखा जा सकता है।

10. भविष्य की कार्ययोजना -

संस्था ने भविष्य में कुछ मुद्दों को लेकर कार्य करने की योजना निश्चित की है जिसमें -

क. आदिवासी सशक्तिकरण - जल, जंगल व जमीन अर्थात स्थानिक संसाधन के पुनर्निमाण तथा भूमि व वन आधारित कार्यक्रम द्वारा उदर निर्वाह समस्या को हल करने का प्रयास व उनकी क्षमता को शोषण व अन्याय से लड़ाई के लिये बढ़ाना।

ख. संस्था ने ग्राम सशक्तीकरण का जो कार्य संसाधनों के विकास व उदर निर्वाह के प्रश्न को लेकर, जन भागीदारी में जो हासिल किया है दूसरे गावों में पंचायत के माध्यम से रिप्लीकेट हो, यह प्रयास प्रशासनिक व पंचायत स्तर पर करना।

ग. वनों के व्यवस्थापन रख रखाव में जन भागीदारी को शासकीय विभाग व वन विभाग के साथ को-आर्डिनेशन कर कैसे स्थापित किया जाय। समाज के उपेक्षित वर्ग जैसे बाल श्रमिक उपेक्षित बच्चों आदिवासी तथा महिलाओं के प्रश्न व उनके न्याय की लड़ाई। ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों के लिये स्वास्थ्य का प्रश्न बाल मृत्यू इन मुद्दों पर समाज का ध्यान जाय, समाज की संवेदन शीलता बढ़े यह पहल। संस्था विशेषकर समाज के अति पिछड़े आदिवासी व उपेक्षित वर्ग के लिये कार्य कर रही है जिसमें गरीबों की लड़ाई हर कार्यक्रम में शामिल है और इसके तरफ संस्था अधिक ध्यान देगी।

11. सरकारी विभागों से तालमेल के संबंध में राय -

सरकारी विभागों से ताल - मेल सरकारी अधिकारियों का समाज कार्य के प्रति रुख संवेदनशीलता पर निर्भर करता है, संस्था प्रयत्नशील है कि शासन की योजनाएंअंतिम व्यक्ति तक संयुक्त प्रयत्न से पहुंचें। फिर भी अभी तक कोई भी संतोषजनक प्रतिसाद नहीं मिला।इस संबंध में शंकाएं भी हैं। क्या शासन स्वयंसेवी संस्थाओं को आंतरिक भावना से विकास कार्य से भागीदारी बनाने को तैयार रहे, फिर भी संस्था का प्रयास होगा।

12. संदेश पाठकों के लिये आपके प्रेरणा स्त्रोत, आपके आदर्श कौन हैं व क्या हासिल करना चाहते हैं-

कितनी भी नई तकनीक का विकास हो, किंतु मेरा विश्वास गांधी विचार धारा, गांधी जी के प्रयोग, उनके ग्राम विकास की संकल्पना ही गांव को शोषण से बचा कर सही ग्राम स्वराज व स्वावलंबन दे सकता है, मै उन्हे ही अपना आदर्श मानता हूं। सामाजिक कार्य के इन दो दशकों में कई सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा जन संगठनों के कार्यकर्ताओं से मेल- मिलाप होता रहा, उनसे भी प्रेरणा मिली, नयी दिशा भी मिली किंतु ऑक्सफेम के प्रतिनिधियों से विशेषकर 1992-93 से 2000 के बीच इस अवधी में काफी कुछ सीखने को मिला समाज में गरीबी व अन्याय के खिलाफ लड़ने के कुछ आयाम भी इनसे सीख ने को मिले किंतु सामाजिक कार्य की प्रेरणा मुझे मेरे स्वर्गीय बड़े पिताजी के द्वारा बचपन से ही मिलती रही है।प्रत्येक गांव अपने आप में सशक्त बने इसकी लहर शुरू से ही ऐसा लक्ष्य परिलक्षित है।

13. पिछले डेढ़ दशको में गैर सरकारी संगठनो में अपने परिणाम मूलक कार्यक्रमों से सरकारी संगठनों, विभागों की जड़ता को तोड़ा है, सरकार भी यह स्वीकारती है परंतु विभागिय स्तर पर बदलाव अब जाकर कुछ दिख रहा है, जबकी अपनी जड़ता, संवेदन हीनता के कारण इनका पराभव हो रहा है। क्या यह सभव नहींकी सरकारे इस दिशा में पहल करें -

पिछले कुछ वर्षो से शासन ने देश में स्वयंसेवी संस्थाओं को साथ लेने का प्रयास भी हो रहा है, जैसे पंचायत राज के माध्यम से गरीबी उन्मूलन व ग्राम सशक्तिकरण, राजीव गांधी जलसंसाधन मिशन शिक्षा गारंटी योजना, डी.आर.डी.ए. व आदिवासी विभग द्वारा एकीकृत ग्राम विकास व आदीवासी विकास कार्यक्रम इत्यादी किंतु इन योजनाओं का क्रियान्वयन आज भी जन भागीदारी से कोसों दूर है, स्थानिय स्तर पर शासकीय अधिकारीयों व कर्मचारियों में योजनाओं के क्रियान्वयन प्रक्रिया संबंधी ~~फ्तमत्तक्~~ स्पष्ट होना आवश्यक है। शासन यदि समाज के प्रति समर्पित व समाज के प्रति संवेदन शीलता रखने वाली संस्थाओं/संगठनों के साथ यदि सही में ताल- मेल बैठाया तो पंचायतों के माध्यम से गांवों में अमूल्य परिवर्तन लाया जा सकता है।इस बात की आज कमी महसूस हो रही है। नीतिगत स्तर पर ग्राम स्वराज्य की घोषणा की गई है, किंतु क्या इसके लिये जमीनी स्तर पर प्रक्रिया शुरू हुई है, इसका आकलन होना चाहिये।

14. आपके कार्य में देशी व विदेशी फंडिग एजेंसी का सहयोग मिलता है, इस संबंध में क्या अनुभव है जैसे नीतिगत दबाव इत्यादि -

विदेशी संस्थाएंअधिकांशतः समाज के प्रति समर्पित संस्थाओंको मदद करती हैं। तथा दोनों की कार्य के प्रती नीतिगत स्पष्टता होने से तथा समय पर कार्य के लिये धन प्राप्त होना कार्य की सफलता के लिये योग्य होता है।शासकीय योजनाऐं कागज पर अच्छे उद्देशयों को लेकर बनी हैं, किंतु सामाजिक विकास के लिये समय पर निधि का न मिलना जनभागीदारी का अभाव, नियोजन के अनुसार धन व क्रिया पद्धती का अभाव इत्यादि विकास को प्रभावित करती है।

15. आप अपने कार्य का कास्ट बेनीफिट क्या मानते हैं -

संस्था ने आदिवासियों के उदर निर्वाह के प्रश्न उनके बाहरी आर्थिक शोषण के मुद्दे को लेकर जिन आदिवासी गांवों में जन भागदारी पर कार्य शुरू किया आज उन गांवों में अन्न धान की कमी दूर हुई है। शोषण के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिये लोगों ने अन्न कोष, बीज कोष, नकद कोष तैयार किया है। स्थानीय संसाधनों के प्रति लोग अपनी जिम्मेदारी समझने लगे हैं।उदाहरण के लिये बैगाचक का सेराझर गांव जहां संस्था ने जब काम शुरू किया था, दो समय का खाना कैसे जुटा पायेंगे, लोग इससे जूझ रहे थे, केवल 3 से 4 माह खेतों से खाने का अनाज पैदा होता था वहांलोगोंने दूसरी फसल लेना शुरू किया। उदर निर्वाह के प्रश्न को लेकर काम शुरू हुआ किंतु आज जंगल बचाने की लड़ाई, उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी लोगोंने ले ली है। यह जन भागीदारी संस्था तथा लोगों के निरंतर सहभागिता से संभव हो सका। बस्तर के कोंडागांव क्षेत्र मेंछोटे कुरुषनार इस गांव में लोगों ने भू-जल संरक्षण कार्य प्रेरणा से, श्रमदान से सिंचाई हेतु लंबी केनाल का निर्माण किया ऐसे कई गांवों के अलग- अलग उदाहरण उपल्बध हैंजो पंचायत राज्य की संकल्पना के मॉडल रूप में खड़े हैं। प्रश्न यह है किक्या सरकार इस काम को नजदीक से देखकर इसकी महत्ता को समझते हुए पंचायतों के माध्यम से अपनी योजनाओं को गरीबी उन्मूलन के लिये लागू करे।

संस्था स्वयंके प्रचार प्रसार के लिये नहीं बल्कि जो काम ग्राम सशक्तिकरण का, गरीबी के खिलाफ लड़ाई का, उपरोक्त गांव मे जिस पद्दती व प्रक्रिया से हुई है वह स्थानीय स्तर से जिला विभाग राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचना आवश्यक है। यह केवल इस कार्य की महत्ता ही नहीं बल्कि इसे और बेहतर बनाने में क्या प्रयास हो सकते हैं, तथा ग्राम सशक्तिकरण का एक अच्छा मॉडल आदिवासी क्षेत्रों के लिये तथा शासकीय विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के लिये कैसा हो सकता है इस रूप में मंथन करने की जरूरत है, मुझे ऐसा लगता है यह प्रयोग एक विकल्प के रूप में शासन सोच सकता है, देख सकता है।

हमारा प्रयास भी इसी दिशा में शुरू हुआ है।

'न्यू सीड' चाड़ा आफिस से धान लेता लामू बैगा
सन् 1997

इस समझाइश के साथ हम लोग चाड़ा गांव स्थित संस्था के स्थानीय कार्यालय लौट आये। अगले दिन लामू कंधे पर कांवर लटकाये संस्था कार्यालय के दरवाजे आया, परंपरागत तरीके से हाथ मिलाने के बाद उसने अनाज हेतु आग्रह किया जिसके उत्तर में संस्था की ओर से उसे 10 कुड़े (50 किलो)चावल दिये गये।

केंद्राबहरा का बैगा
अन्न मांगने थाड़पथरा
गांव आया है
सन् 1997

सन् 2002
लामू परिवार की स्त्रियां,
अब अन्न संकट नहीं
सताता

अत्यंत अभाव और भुखमरी के चलते ही लामू बैगा संस्था के पास आया था। बैगाचक में संस्था और आदिवासियों के संबंधों की यह शुरूआत थी,इसके बाद थाड़पथरा गांव के अधिकांश परिवार अन्न सहायता हेतु आये और वहां ग्राम सभा की नियमित बैठकें,अन्न कोष, नकद कोष तथा भूमि सुधार के कार्य हुए।

सन् 2002
लामू अब गांव का अन्न
कोष संचालित करता है।

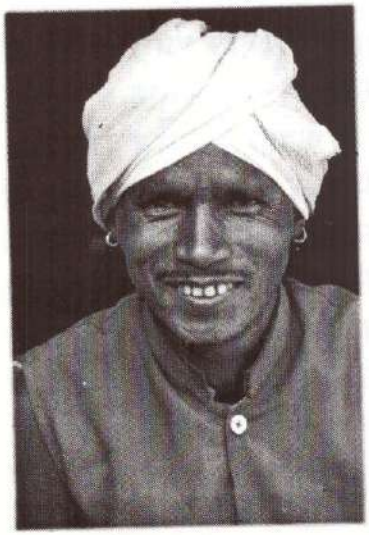

वर्ष 2001 तक थाड़पथरा मेंअन्न कोष नकद कोष जमा है। लामू के परिवार के पास अब पर्याप्त अन्न है और जैसा कि वर्ष 2000 मेंलिये गये मुख पृष्ठ के चित्र से स्पष्ट है परिवार की बहू अब स्वस्थ और सुखी है। सिर्फ यह परिवार या इस गांव तक परिर्वतन का यह दौर थमा नहीं है, आस-पाास के गावों में भी जीवन यापन की स्थितियां सुधरी हैं। संस्था के सहयोग से लोगोंने ग्राम स्वराज के पारंपरिक रूप को पुनर्जीवित कर दिखाया है।

लामू की बहू का
सन् 2000 में लिया गया चित्र

।।अथ श्री कथा लामू के संकट मोचन की।।

नालाबांध

क्र .	गांव का नाम	लाभान्वित परिवार	मानव दिवस	खर्च	लोगों की भागीदारी
01.	सेराझर	--	30	900.00	मानव श्रम

डिंडौरी जिले में वर्तमान कार्य क्षेत्र के गावों की सूची

क्रमांक	बैगाचक क्षेत्र	क्रमांक	अमरपुर क्षेत्र
1	तांतर	16	सामर बैगाटोला
2	सिलपिड़ी	17	सिधौली
3	सेराझर	18	चंद्रागढ़
4	खमेरा	19	पिपरिया
5	कांदाटोला	20	संजारी
6	थाड़पथरा	21	हतकठा
7	लदरादादर	22	झरना
8	केंद्राबहरा	23	घुगारी
9	बर्थना	24	बांकाटोला
10	तिरचुला	25	जैतपुरी
11	जिलंग	26	गंजरा
12	कांदावानी	27	समनापुर
13	सैलाटोला	28	अमदारी
14	ढाबा	29	खुदुरपानी
15	अजगर		

पत्थर बांध

क्रम	गांव का नाम	पत्थर बांध (एकड़ में)						एकड़
		1998		1999		2000		
		परिवार	एकड़	परिवार	एकड़	परिवार	एकड़	
01	तांतर	34	34.0	48	3.45	51	13.32	50.77
02	सेराझर	00	0.00	12	0.42	40	16.27	16.69
03	खम्हेरा	30	35.0	00	0.00	24	1.21	36.21
04	थाड़पथरा	06	03.0	02	0.12	06	1.42	4.54
05	कांदाटोला	04	02.0	03	0.14	07	0.79	2.93
06	लदरादादर	00	0.0	00	0.00	00	0.00	0.00
07	केंद्राबहरा	00	0.00	00	0.00	01	0.05	0.05
08	सिलपिड़ी	00	0.00	01	0.10	15	2.46	2.56
09	साम्हर	06	02.0	17	2.60	08	0.58	5.18
10	चंद्रागढ़	08	04.4	17	0.52	16	5.75	10.64
11	पिपरिया	08	03.1	16	0.25	23	4.21	7.56
12	सिधौली	07	08.4	12	0.31	06	0.89	9.60
13	संझारी	04	01.4	18	0.53	00	0.00	1.63
14	हथकठा	12	10.0	85	4.17	23	4.84	19.01
	कुल	119	103.3	213	12.61	220	51.79	167.37

व्यय की गई कुल राशि 4,98,083.00

संस्था ने उपरोक्त 14 गावों के अतिरिक्त अन्य 15 नयें गांव जो कि इसी क्षेत्र के हैं,वर्ष 2001-2002 से यहां कार्य प्रारंभ किया है। मध्य प्रदेश व छत्तिसगढ़ के 3 जिलों जबलपुर,छिंदवाड़ा तथा कांकेर के 30 गावों में भी इसी आधार पर सन 2002-2003 में कार्य विस्तार शुरू किया है।

तालाब सफाई तथा मेड़बंधान - ग्राम धुधरी, अमरपुर

तालाबों की सफाई

वर्ष 99 से 2000

क्र.	गांव का नाम	लाभान्वित परिवार	मानव दिवस	खर्च रु.	लोगों की भागीदारी
01.	हतकठा	150	4023	120687.00	मानव श्रम
02.	थाड़पथरा	44	583	17500.00	मानव श्रम
	कुल	194	4606	138187.00	

जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाने तथा टिकाऊ खेती को प्रोत्साहित करने हेतु 35 गांवों के 56 कृषकों के साथ वर्मी कम्पोस्ट खाद (केंचुआ खाद) तैयार करने की मुहिम चलाई गई है।

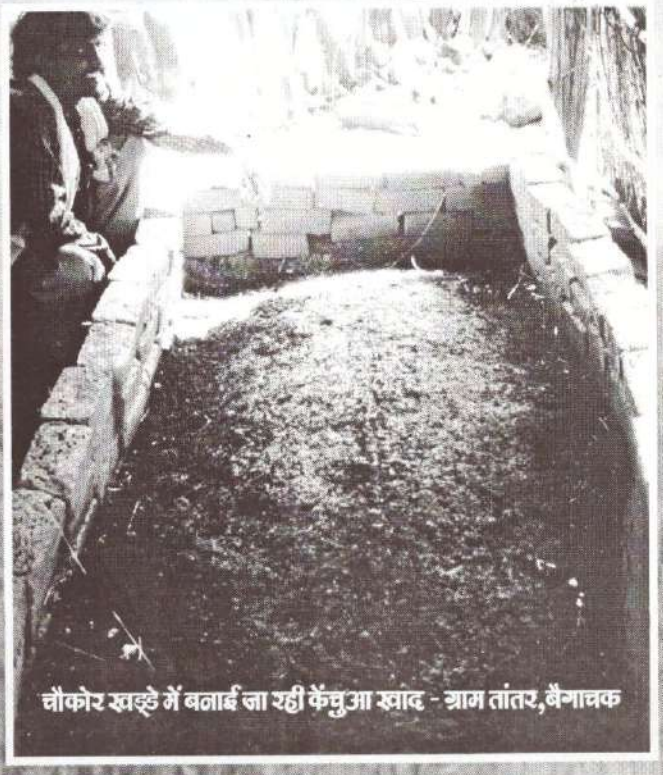

चौकोर खड्डे में बनाई जा रही केंचुआ खाद - ग्राम तांतर, बैगाचक

सेवा

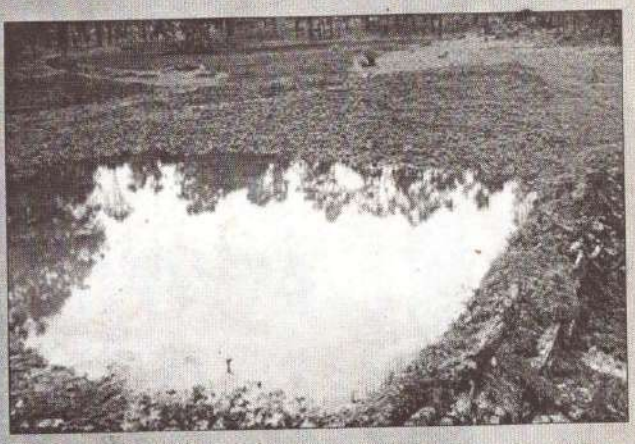

नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ वीमेन चाइल्ड एंड यूथ डेवलपमेंट

मुख्य कार्यालय : लेआउट न. 4, प्लाट न. 14, घरमपेठ गृहनिर्माण सोसायटी, जयप्रकाश नगर, नागपुर – 25

E-Mail: niwcyd @ nagpur.dot.net.in

आलेख, चित्र एवं संपादन : रजनीकांत यादव / ले आउट डिजाइनिंग : निशांत / निजि वितरण हेतु / मुद्रक : स्टेण्डर्ड प्रेस, बस स्टेण्ड, जबलपुर